समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017
RNI No. 38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

युग क्रान्ति वर्ष 2016-2017

16 अगस्त 2017

वर्ष : 30, अंक : 04
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अगस्त 2017
वार्षिक चंदा : ₹ 40/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 500/-
प्रति अंक : ₹ 2/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

गुजरात और राजस्थान के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में गायत्री परिवार की सक्रियता 3

कॉवड़ियों को भक्ति की सार्थकता का संदेश दिया 4

ज्ञानदीक्षा समारोह ने मानवीय गरिमा के अनुरूप जीवन जीने की प्रेरणा दी 8

डॉ. चिन्मय पण्ड्या टेम्पलटन पुरस्कार चयन समिति के जज नियुक्त हुए 8

गुजरात-राजस्थान में बाढ़ राहत कार्य

सहयोग में पीछे न रहें

इन दिनों गुजरात और राजस्थान में आयी भीषण बाढ़ की भयावहता सर्वविदित है। गुजरात का बनासकाँठा और राजस्थान के जालोर, सिरोही जिले सर्वाधिक प्रभावित हैं।

शांतिकुंज से पहुँचे निर्देश गुजरात-राजस्थान के लिए टोलियाँ रवाना

इस त्रासदी के समाचार मिलते ही शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल अविलंब सक्रिय हो गया। कनाडा के प्रवास पर होने के बावजूद आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी बाढ़ के समाचार निरंतर लेते रहे और कार्यकर्त्ताओं को आवश्यक निर्देश देते रहे। शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं के मार्गदर्शन के लिए त्वरित सक्रिय हुआ। आदरणीया शैल जीजी आपदा प्रबंधन दल की गोष्ठी ली, स्थिति की समीक्षा की और गुजरात-राजस्थान दोनों प्रांतों के लिए दो टोलियाँ तत्काल रवाना कीं।

तीव्र गति से चल रहे हैं राहत कार्य

दोनों ही प्रांतों में राहत कार्य बड़ी तीव्र गति से राहतकार्य चल रहे हैं। गुजरात में गायत्री शक्तिपीठ डीसा को बेस कैम्प बनाया गया। गायत्री परिवार ओढ़व (अहमदाबाद), डीसा, मालगढ़ आदि शाखाओं ने 26 जुलाई से ही राहत कार्य आरंभ कर दिये। समाचार लिखे जाने तक (2 अगस्त) 10,00,000 भोजन के पैकेट, 5,00,000 पानी की बोतलें, 2,00,000 लोगों को कपड़े और 1,50,000 राशन के पैकेट (न्यूनतम 7 दिनों के लिए) लोगों तक पहुँचा दिये गये थे।

विस्तृत समाचार पृष्ठ 3 पर देखें

सभी समस्याओं का सुनिश्चित उपचार

सादा जीवन-उच्च विचार

साधन-सुविधा ही सबकुछ नहीं

आज समाज के सामने असंख्य विकृतियों और व्यक्ति के सामने असंख्य समस्याओं के अम्बार खड़े हैं। पतन-पराभव के संकट, विग्रह के वातावरण, अराजकता-असमंजसों का निवारण-निराकरण इन्हीं दिनों किया जाना आवश्यक है। अगणित प्रकार की सुविधा-सम्पदाओं का अभिवर्द्धन भी होना है। पर उन सबके लिए मानवी चेतना का स्वस्थ, समुन्नत होना आवश्यक है। यदि भूमि पर, साधनों पर आधिपत्य जमाकर बैठे हुए अथवा योजनाएँ बनाने वाले लोग विकृत मस्तिष्क के होंगे, तो उलझी हुई समस्याओं का समाधान तो दूर, विग्रह और ध्वंस ही खड़े करेंगे।

मस्तिष्क विकृत, हृदय निष्ठुर, रक्त दूषित, पाचन अस्त-व्यस्त हो, शरीर के अंग-प्रत्ययों में विषाणुओं की भरमार हो, तो फिर वस्त्राभूषण की भरमार, अगर-चंदन का लेपन और इत्र, फुलेल का मर्दन बेकार है। वस्त्र-आभूषण जुटा देने और तकिये के नीचे स्वर्ण-मुद्राओं की पोटली रख देने से भी कुछ काम न चलेगा। जबकि स्वस्थ, सुडौल होने के कारण सुन्दर दीखने वाला शरीर गरीबी में भी हँसती-हँसाती जिन्दगी जी लेता है; आये दिन सामने आती रहने वाली समस्याओं से भी निपट लेता है और किसी न किसी प्रकार, कहीं न कहीं से प्रगति के साधन भी जुटा लेता है।

वस्तुतः महत्त्व साधनों या परिस्थितियों का नहीं, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, प्रतिभा और दूरदर्शिता का है। वह सब उपलब्ध रहे, तो फिर न अभावों की शिकायत करनी पड़ेगी और न जिस-तिस प्रकार के व्यवधान सामने आने पर अभ्युदय में कोई बाधा पड़ेगी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

वर्तमान युग की समस्त समस्याओं का समाधान है-सादा जीवन-उच्च विचार। इस सिद्धान्त को अपनाते ही प्रस्तुत असंख्य समस्याओं में से एक के भी पैर न टिक सकेंगे। जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी, और बहादुरी की नीति अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कृति को व्यावहारिक जीवन में स्थान देने लगेगा, तो देखते-देखते समस्याओं के रूप में छाया अंधकार मिटता चला जाएगा। ग़ुजारे के लायक इतने साधन इस संसार में मौजूद हैं कि हर शरीर को रोटी, तन को कपड़ा, हर सिर को छाया और हाथ को काम मिल सके। तब ग़रीबी-अमीरी की विषमता भी क्यों रहेगी? जाति-लिंग के नाम पर पनपने वाली विषमता का अनीति-मूलक और दुःखदायी प्रचलन भी क्यों रहेगा?

औसत नागरिक स्तर का जीवन स्वीकार कर लेने पर सुविस्तृत खेतों, देहातों में रहा जा सकता है और वायुमण्डल-वातावरण को प्रफुल्लता प्रदान करते रहने, संतुष्ट रखने में सहायक हुआ जा सकता है।

प्राचीनकाल की सुसंस्कृत पीढ़ी इसी प्रकार रहती थी और मात्र हाथों के सहारे बन पड़ने वाले श्रम से जीवनयापन के लिए सभी आवश्यक साधन सरलतापूर्वक जुटा लेती थी। न प्रदूषण फैलने का कोई प्रश्न था और न शहरों की ओर देहाती प्रतिभा के पलायन का कोई संकट। न देहात दरिद्र, सुनसान, पिछड़े रहते थे और न शहर गंदगी, घिच-पिच, असामाजिकता के केन्द्र बनते थे।

मनुष्य स्नेह और सहयोगपूर्वक रहने के लिए पैदा हुआ है। लड़ने, मरने और त्रास देने के लिए नहीं। यदि आपाधापी न मचे, तो फिर एकता और समता में बाधा उत्पन्न करने वाली असंख्य कठिनाइयों में से एक का भी अस्तित्व दृष्टिगोचर न हो। युद्ध प्रयोजनों में जो सम्पदा, शक्ति और प्रतिभा का नियोजन हो रहा है, उन सब को यदि बचाया जा सके और उन समूचे साधनों को नवसृजन प्रयोजनों में लगाया जा सके, तो समझना चाहिए कि इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य के संबंध में जो कल्पनाएँ की गई हैं, वे सभी नये सिर से, नये ढाँचे में ढलकर साकार हो जायेंगी।

बुद्धिमानों की नासमझी

तथाकथित बुद्धिमान और शक्तिशाली लोग इन दिनों की समस्याओं और आवश्यकताओं को तो समझते हैं, पर उपाय खोजते समय यह मान बैठते हैं कि यह संसार मात्र पदार्थों से सजी पंसारी की दुकान भर है। इसकी कुछ चीजों इधर की उधर कर देने, अनुपयुक्त को हटा देने और उपयुक्त को उस स्थान पर जमा देने भर से काम चल जायेगा। समूचे प्रयास इन दिनों इसी दृष्टि से बन और चल रहे हैं।

आज यद्यपि विश्व की मूर्धन्य प्रतिभाएँ हर समस्या को अलग-अलग समस्या मानकर उनके पृथक्-पृथक् समाधान खोजने और उपचार खड़े करने के लिए भारी माथा-पच्ची कर रही हैं; पर उनसे कुछ बन नहीं पा रहा है। न अस्पतालों, चिकित्सकों, औषधि, आविष्कारों पर असीम धनशक्ति-जनशक्ति लगाने से रोग काबू में आ रहे हैं और न पुलिस, कानून, कचहरी, जेल आदि अपराधों को कम करने में समर्थ हो रहे हैं। अचिन्त्य-चिन्तन, दुर्व्यसनों आदि के रहते बैंकों के भारी कर्ज और ढेरों अनुदान बाँटने पर भी गरीबी की समस्या का वास्तविक हल हाथ लग नहीं रहा है।

परिवर्तन के महान क्षण

अगले दिनों परिस्थितियाँ बदलेंगी। जनमानस यह देखकर रहेगा कि अगणित समस्याएँ उत्पन्न कहाँ से होती हैं? हमें उस रानी मक्खी को खोजना है, जो आये दिन असंख्यों अण्डे-बच्चे जनती है और जिनके भरण-पोषण में छत्तों की समस्त मधुमक्खियों के लगे रहने पर भी समस्याएँ जहाँ की तहाँ बनी रहती हैं।

मनुष्यता समय-समय पर ऐसी आश्चर्यजनक करवटें लेती रही है, जिसके अनुसार देवमानवों का नया बसन्त, नई कलियाँ और नये फल-फूलों की सम्पदा लेकर सभी दिशाओं में अट्टहास करता दीख पड़ता है। महामानवों, देवपुरुषों, मनीषियों, सुधारकों, सृजेताओं, का ऐसा उत्पादन होता है, मानो वर्षा ऋतु ने अगणित वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं की नई फसल उगाने की सौगन्ध खाई हो?

अगले ही दिनों नये सृजेताओं की एक नई पीढ़ी हम में से ही विकासित होगी, जिसके सामने अब तक के सभी सन्तों, सुधारकों और शहीदों के पुरुषार्थ छोटे पड़ जायेंगे।

जब आवेश की ऋतु आती है, तो जटायु जैसा जीर्ण-शीर्ण भी रावण जैसे महायोद्धा के साथ निर्भय होकर लड़ पड़ता है। गिलहरी श्रद्धामय श्रमदान देने लगती है और सर्वथा निर्धन शबरी अपने संचित बेरों को देने के लिए भाव-विभोर हो जाती है। यह अदृश्य में लहराता दैवी-प्रवाह है, जो नवसृजन के देवता की झोली में समयदान, अंशदान ही नहीं, अधिक साहस जुटाकर हरिश्चन्द्र की तरह अपना राजपाट और निज का, स्त्री बच्चों का, शरीर तक बेचने में आगा-पीछा नहीं सोचता। दैवी आवेश जिस पर भी आता है, उसे बढ़-चढ़ कर आदर्शों के लिए समर्पण कर गुजरे बिना चैन नहीं पड़ता।

यही है महाकाल की वह अदृश्य अग्नि शिखा, जो चर्मचक्षुओं से तो नहीं देखी जा सकती है, पर हर जीवन्त व्यक्ति से समय की पुकार कुछ महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थ कराये बिना छोड़ने वाली नहीं है। ऐसे लोगों का समुदाय जब मिल-जुलकर अवांछनीयताओं के विरुद्ध निर्णायक युद्ध छेड़ेगा और विश्वकर्मा की तरह नई दुनिया बनाकर खड़ी करेगा, तो अंधे भी देखेंगे कि कोई चमत्कार हुआ। पतन के गर्त में तेजी से गिरने वाला वातावरण किसी वेधशाला से छोड़े गये उपग्रह की तरह ऊँचा उठ कर अपनी नियत कक्षा में द्रुतगति से परिभ्रमण करने लगेगा।

वाङ्मय-राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?
पृष्ठ 1.37-1.40 से संकलित, संपादित

शब्दों से परे भी गायत्री महामंत्र के भावों की महत्ता अद्भुत-अनुपम है

जिन्हें भी सत्य की झलक मिली उन्होंने वही भाव अपनाये, दिव्य अनुदान पाये

अद्भुत श्रेष्ठतम मंत्र

भारतीय आर्ष ग्रंथों में तो गायत्री महामंत्र की महत्ता मुक्त कंठ से गायी ही गयी है, अन्य देशों और अन्य सम्प्रदायों के आध्यात्मिक साधकों, विचारकों ने भी उसे अद्भुत, अनुपम कहा है। मंत्रों की विशेषता उनके शब्द गठन से भी होती है और उनमें सन्निहित भावों से भी। गायत्री मंत्र के बारे में भी सिद्ध साधकों के उसी प्रकार के अनुभव हैं।

थियोसॉफिकल सोसाइटी विश्वमान्य आध्यात्मिक संगठन है। सवा सौ से अधिक देशों में उसका समर्थ तंत्र फैला हुआ है। उक्त संगठन के सम्मेलन जहाँ भी होते हैं, उसका शुभारम्भ भारतीय परम्परा के अनुरूप विशेष सामूहिक पूजा प्रक्रिया से साथ किया जाता है। उस पूजन पद्धति को 'भारत समाज पद्धति' कहा जाता है। उसकी एक छोटी पुस्तिका इसी नाम से प्रकाशित है, जिसके आधार पर सभी साधक सामूहिक पूजन में भाग लेते हैं। उक्त पुस्तक की भूमिका में 'पादरी लैडबिटर' ने गायत्री मंत्र के बारे में महत्वपूर्ण अनुभव प्रकाशित किए हैं।

श्री लैडबिटर ऑकल्टिस्ट (दिव्य दृष्टि प्राप्त साधक) थे। वे विभिन्न आध्यात्मिक प्रयोगों से होने वाले सूक्ष्म जगत के प्रभावों, प्रतिक्रियाओं को देख-समझ लेते थे। उनके अनुभव का सार-संक्षेप कुछ इस प्रकार है :-

''गायत्री मंत्र के भावपूर्ण जप का प्रभाव सूक्ष्म जगत में तत्काल परिलक्षित होता है। अनन्त आकाश से दिव्य ऊर्जा का किरण पुंज साधक के शरीर पर अवतरित होता दिखता है। वह दिव्य प्रकाश साधक के सामने की ओर शंकु (कोनिकल) आकार में एक प्रकाशमान बिन्दु पर केन्द्रित(फोकस) हो जाता है। उसका प्रभाव क्षेत्र साधक के स्तर के अनुरूप कम-अधिक होता है। लगता है कि यह प्रकाश बिन्दु सद्भाव एवं सद्विचार संचारक होता है। उसके प्रभाव क्षेत्र में यदि कोई व्यक्ति आ जाता है तो वह प्रकाश पुंज मुड़कर उस व्यक्ति के हृदय और मस्तिष्क को स्पर्श करता है। यदि गायत्री मंत्र का भाषानुवाद किसी भी भाव में किया जाए तो उसके जप से भी इसी प्रकार का प्रभाव परिलक्षित होता है। संस्कृत भाषा में मूल मंत्र के प्रभाव से उस प्रकाश पुंज के चारों ओर प्रकाश की कलात्मक संरचना विशेष रूप से दिखती है।''

श्री लैडबिटर की यह अनुभूति भारतीय ऋषि-मनीषियों के द्वारा वर्णित गायत्री महामंत्र की महत्ता के अनुरूप है। इस बात से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि मंत्र का प्रभाव साधक की भावना के अनुसार ही प्रकट होता है। भाषा बदलने से कोई खास अन्तर नहीं पड़ता। विश्व में सभी भाषाओं और सभी मतों के साधक इस मंत्र का लाभ सहजता से उठा सकते हैं।

मंत्र के भाव सूत्र

गायत्री मंत्र त्रिपदा-तीन चरण वाला है। १-'तत्सवितुर्वरेण्यं', २-'भर्गो देवस्य धीमहि' और ३. 'धियो यो नः प्रचोदयात्'। ॐ भूर्भुवः स्वः को उसका शीर्ष कहा जाता है। उसके मुख्य भाव इस प्रकार समझे जा सकते हैं -

- परमात्मा सर्वव्यापी है उसे सबके जन्मदाता (माता-पिता-सविता) के रूप में अनुभव किया जाय।
- वह सविता ही हम सबके लिए वरणीय (श्रेष्ठ, सराहनीय, हितकारी) है।
- उसके भर्ग (दोषों से मुक्त करने वाले पवित्र तेज) को अपने अंदर धारण करें। उसी की भक्ति करें।
- वह हमें सन्मार्ग पर प्रेरित करे। उसी की इच्छा के अनुरूप हम सब का जीवन चले।

सत्य तो सत्य है। किसी भी मार्ग पर श्रद्धापूर्वक चलने वाले साधक सत्य की अनुभूति करते ही हैं। साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर विवेकपूर्वक अध्ययन करने पर गायत्री का तत्त्वज्ञान और उसके सत्परिणामों के प्रमाण अन्य सम्प्रदायों में भी मिल जाते हैं। यहाँ ईसाई और इस्लाम सम्प्रदायों के अन्तर्गत गायत्री के तत्त्वज्ञान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है।

ईसाई मत

ईसाई मत का सर्वमान्य ग्रंथ बाइबिल है। सबसे श्रेष्ठ प्रार्थना के रूप में (गॉड्स प्रेयर) ईश्वर की प्रार्थना को मान्यता प्राप्त है। बाइबिल के अध्याय 'मॅथ्यू' (6.9-13) में यह प्रार्थना है। हिन्दी में उसके प्रारम्भिक चरण इस प्रकार हैं-

मंत्र :- • ओ स्वर्ग में रहने वाले हमारे पिता! आपका नाम सराहा-सम्मानित किया जाय।

• आपका साम्राज्य आये आये।

• आपकी इच्छा पृथ्वी पर भी उसी प्रकार चले जैसे स्वर्ग में चलती है।

उक्त भाव गायत्री मंत्र के ही अनुरूप है। ईश्वर को पिता, जन्मदाता-सविता के रूप में याद किया गया है। उन्हें सराहनीय, श्रेष्ठ (वरणीय) माना गया है। उनका साम्राज्य उनके तेज-प्रभाव को अंगीकार करने का भाव (दिव्य भर्ग धारण करने) का द्योतक है। अपनी इच्छा को छोड़कर प्रभु की इच्छा के अनुसार विश्व व्यवस्था बने, यह चरण गायत्री मंत्र के 'धियो यो नः प्रचोदयात्' पद के अनुसार ही है। गायत्री मंत्र की तरह इसमें भी प्रार्थना व्यक्ति विशेष (मेरे लिए नहीं) नः (हम सबके लिए) की गयी है।

प्रभाव :- गायत्री मंत्र के प्रभाव के बारे में अथर्ववेद का मंत्र ''स्तुता मया वरदा.....।'' प्रसिद्ध है।

मंत्र :- *स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम्, पावमानी, द्विजानां, आयुः, प्राणं, प्रजां, पशुं, कीर्तिं, द्रविणं, मह्यम दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम।*

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि वेदमाता गायत्री दिव्य प्रेरणा एवं पवित्रता देने वाली है। यह साधक को इस लोक में श्रेष्ठ आयु, सभी तरह की लौकिक संपन्नता तथा पवित्र यश प्रदान करती है। आयु पूर्ण होने पर ब्रह्मलोक-सद्गति का मार्ग प्रशस्त कर देती है।

भारत में तो तमाम ऋषियों-साधकों के जीवन में गायत्री साधना के उक्त लाभ मिलने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। बाइबिल के अध्याय 3 में भी ऐसी कथा मिलती है। **कथा** -

ईश्वर ने राजा सोतोमन को दिया अद्भुत वरदान

ईश्वर भक्त राजा डेवडि ने अपने ईश्वर भक्त पुत्र सोलोमन को राज्य सौंप दिया। सोतोमन ने पवित्र क्षेत्र (तीर्थ) में जाकर प्रभु के नाम पर आहुतियाँ (बर्न्ट ऑफरिंग्स) दीं। उसकी निष्ठा से प्रभु प्रसन्न हुए और प्रगट होकर इच्छित वरदान माँगने को कहा।

सालोमन ने कहा- • हे प्रभु! आपने अपने सेवक, मेरे पिता पर विशेष कृपा की इसलिए वह हृदय की शुद्धता, सत्य और सज्जनता के मार्ग पर चला। आपने उस पर एक विशेष कृपा यह की कि उसे राज्य सँभालने योग्य एक पुत्र (मुझे) दिया।

• हे प्रभु! आपने मेरे पिता की जगह मुझे राजा भी बना दिया, लेकिन मैं तो एक अबोध बालक जैसा हूँ, जो सामान्य व्यवहार भी नहीं जानता। आपका यह सेवक आपके द्वारा चुने गये अगणित महान व्यक्तियों के बीच रह रहा है।

• इसलिए हे प्रभु! आप मुझे एक संवेदनशील (सद्भावनायुक्त) हृदय दें, ताकि मैं लोगों की भावनाओं को समझ सकूँ। साथ ही मुझे भले-बुरे में अंतर करने में समर्थ सद्विवेक भी प्रदान करें, ताकि मैं आपके द्वारा चुने गये महान व्यक्तियों के बीच न्याय कर सकूँ।

इस प्रकार श्रेष्ठ आशीर्वाद माँगने के कारण प्रभु सोलोमन पर प्रसन्न हुए। प्रभु ने कहा ''तुमने न तो अपने लिए लम्बी उम्र और धन-दौलत की माँग की और न अपने शत्रुओं के अहित की कामना की, बल्कि तुमने अपने लिए समझदारी और न्याय करने की क्षमता माँगी, इसलिए मैं प्रसन्न हूँ।''

सुनो, मैं तुम्हारे कहे अनुसार तुम्हें सद्विवेक और संवेदनशीलता तो देता ही हूँ, इसी के साथ जो तुमने नहीं माँगी वे दोनों लोकों की सम्पत्ति और सम्मान भी देता हूँ। अगर तुम अपने पिता डेविड की तरह मेरे रास्ते पर बढ़ते रहे, मेरे रास्ते के अनुसार चले और मेरे निर्देशों को पालन करते रहे तो मैं तुम्हारी आयु भी बढ़ा दूँगा।''

कथा से स्पष्ट है विश्व स्रजेता प्रभु (परमपिता या आद्यशक्ति) का विशेष अनुग्रह सद्भावना एवं सद्विवेक प्राप्त करके लोकहित की कामना करने वालों को प्राप्त होता है। उसे वे बिना माँगे ही दोनों लोकों (पृथ्वी और स्वर्ग) की श्रेष्ठ विभूतियाँ प्रसन्नतापूर्वक प्रदान करते हैं। वेद के मंत्र द्रष्टा और बाइबिल के ईश्वरीय संदेशवाहक दोनों के भाव एक जैसे ही हैं। उनमें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार भाषा का अन्तर भर दिखाई देता है।

इस्लाम का मत

इस्लाम का सर्वमान्य ग्रंथ 'क़ुरान शरीफ़' है। वेदों की तरह 'क़ुरान' को भी ईश्वर द्वारा प्रेषित ज्ञान माना जाता है। सनातन-वैदिक मत में गायत्री महामंत्र को जिस प्रकार महत्ता दी गयी है, उसी प्रकार इस्लाम में 'सूरह फ़ातिहा' अथवा 'अल हम्द शरीफ़' का महत्व माना गया है। संत विनोबा भावे ने क़ुरान के अनुवाद 'रुहल क़ुरान' अर्थात् 'क़ुरान सार' में सूरह फ़ातिहा को क़ुरान का मंगलाचरण कहा है। इस्लाम की हर महत्वपूर्ण इबादत में 'फ़ातिहा' को शामिल किया जाता है। गायत्री मंत्र को वेदमाता की संज्ञा दी गयी है तो 'सूरह फ़ातिहा' को भी 'उम्मुल क़िताब' (ज्ञान की माँ) कहा गया है।

डॉ. मोहम्मद हनीफ़ ख़ाँ शास्त्री ने दरभंगा (बिहार) के कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय से 'महामंत्र गायत्री और सूरह फ़ातिहा' विषय पर संस्कृत में पीएच.डी.(Ph.D.) किया है। इसी नाम से उनकी पुस्तक हिन्दी में भी प्रकाशित हुई है। उसमें उन्होंने लिखा है :-

''अब जहाँ तक सूरह फ़ातिहा की बात है, वह गायत्री मंत्र से अलग नहीं है। यदि द्वेषरहित एवं उदारतापूर्वक इसके वाक्यांशों पर विचार किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि 'सूरह फ़ातिहा' सूत्ररूप गायत्री मंत्र की व्याख्यास्वरूप है।'' डॉ. हनीफ़ शास्त्री ने विस्तार से दोनों मंत्रों के विभिन्न चरणों की समीक्षा करके उन्हें एक दूसरे के अनुरूप सिद्ध किया है। संक्षेप में इस तथ्य को यहाँ स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। सूरह फ़ातिहा अर्थ सहित इस प्रकार है।

'विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'- शुरू करते हैं अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है। इस सूत्र को गायत्री महामंत्र के शीर्ष 'ॐ भूर्भुवः स्वः' के अनुरूप माना जाता है। 'ॐ' अक्षर परमेश्वर-अल्लाह का बोधक है। उसे गुणों के रूप में प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप कहा गया है। इस्लाम ने उसे दयालु और कृपालु के रूप में याद करने की अपील की है।

'अलहम्द लिल्लाहिरब्बिल् आलमीन' अर्थात् सारी प्रशंसाएँ-स्तुतियाँ अल्लाह के लिए हैं जो सारे ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण करने वाला है। यह सूत्र गायत्री मंत्र के प्रथम चरण 'तत्सवितुर्वरेण्यं' के अनुरूप है। सविता रूप-सबका पालन-पोषण करने वाला परमात्मा ही वरणीय-प्रसंशनीय है।

'अर्रहमानिर्रहीम मालिकीयोमिद्दीन'- वह रहमतों (दया-कृपा) की बारिश करने वाला और अन्तिम न्याय करने वाला है। इसे गायत्री मंत्र के दूसरे चरण 'भर्गो देवस्य धीमहि' के समभाव वाला माना जाता है। दयालु देव के भर्ग-तेज, उसकी सामर्थ्य का ही ध्यान किया जाय। वही हमारे पापों को नष्ट करके हमारे अन्दर देवत्व को विकसित कर सकता है।

'इय्याक़नअबुदु व इय्याक नस्तईन'-हम तेरी ही भक्ति करते हैं और तुझसे ही मदद चाहते हैं। यह सूत्र भी ऊपर वाले सूत्र का ही पूरक है। उसी दिव्य तेज सम्पन्न की शरण में जाकर उसीसे उम्मीद रखने वाले ही सच्चे भक्त कहला सकते हैं। उससे हम क्या उम्मीद, आशा-अपेक्षा-प्रार्थना करें?

'इहिदि नस्सिरातलमुस्तक़ीम' अर्थात (हे परमेश्वर!) हमको सीधी राह पर चला। यह सूत्र गायत्री मंत्र के तीसरे चरण ''धियो योनः प्रचोदयात्'' के समानार्थक है। मनुष्य संसार से प्रभावित होकर उसी से प्रेरणा लेने लगता है और भटक जाता है। ईश्वर भटकने न दे। हमें प्रगति और सद्गति के परम लक्ष्य की तरफ सीधी राह पर चला दे, यही प्रार्थना सच्चे भाव से की जानी चाहिए। इस सूत्र में भी 'मैं' की जगह हम सबके लिए प्रार्थना की गयी है।

सूरह फ़ातिहा के इन सूत्रों में गायत्री महामंत्र का पूरा भाव प्रकारान्तर से समाविष्ट हो जाता है। उसके अगले दो चरण और हैं, जो उस सीधी राह को भी स्पष्ट करने के लिए कहे गये हैं।

'सिरातल्जीन अन्अम्त अलैहिम'- अर्थात् हे प्रभु! हमें उन लोगों की राह पर चला, जिस पर चलने वालों पर तू अपने असीम अनुदान बरसाता है।

'गैरिल-मगज़ूबि अलैहिम तलज्ज्वाल्लीनि'- अर्थात् उन लोगों की राह पर मत चला जो भटक गये हैं और तेरे कोप के भाजन हुए हैं।

सूरह फ़ातिहा के सूत्रों को समझ लेने पर उसे गायत्री मंत्र का पूरक मान लेने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। सूरह फ़ातिहा का कलेवर गायत्री मंत्र से कुछ बड़ा इसलिए हो गया है कि देश, काल के अनुसार मूल भावों को थोड़ा अधिक स्पष्ट करने की ज़रूरत समझी गयी। पूरी बात को समझकर जप या लेखन साधना के लिए सीमित सूत्रों (सूत्र 3,4,5 **अर्रहमान ... से लेकर मुस्तक़ीम** तक) का प्रयोग किया जा सकता है।

इस्लाम के तमाम विद्वान गायत्री मंत्र के भावों से प्रभावित हुए और उन्होंने उसके भावों को उर्दू कविता के रूप में व्यक्त किया है। 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गीत के रचनाकार अल्लामा मोहम्मद इक़बाल की ग्रंथावली 'कुल्लियात इक़बाल' के पृष्ठ क्र. 20 पर गायत्री मंत्र का तरजुमा (पद्यानुवाद) 'आफताब' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। उर्दू पत्रिका 'हमारी जुबान' (8 मई 1994 ई.) के अंक में पृष्ठ क्र. 6 पर 'साबिर अबोहरी' द्वारा किया गया गायत्री मंत्र का उर्दू पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ था। उन्होंने भी इसे सूरह फ़ातिहा से मिलता जुलता कहा है।

निवेदन : उक्त आधार पर मनुष्य मात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य की कामना से साधना, प्रार्थना करने के लिए ईसाइयों और मुसलमानों को भी आसानी से सहमत किया जा सकता है। इस प्रकार युग निर्माण अभियान की समर्थ इकाइयाँ इन सम्प्रदायों में भी गठित और सक्रिय की जा सकती हैं।

गणेशोत्सव और दुर्गापूजा पर्व पर्यावरण के अनुकूल ही मनायें

जलस्रोतों को प्रदूषण से बचायें

भक्त चाहते हैं भगवान का प्यार, शांति, समृद्धि और सुखी संसार। पर करें नहीं यदि विवेक-विचार, तो कैसे हो भक्तों का उपकार?

अखिल विश्व गायत्री परिवार पिछले कई वर्षों से गणेशोत्सव और दुर्गा पूजा जैसे पर्वों को अपनी सनातन परम्परा के अनुरूप, पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए जनजागरूकता अभियान चला रहा है। इसमें उल्लेखनीय सफलता मिली है। घर-घर मिट्टी और सुपारी की बनी गणेश प्रतिमाओं की स्थापना होने लगी। मूर्तियों का विसर्जन पवित्र नदी, तालाबों में न होकर अलग से एक कुण्ड बनाने और उन्हीं में विसर्जन करने का क्रम जोरशोर से आरंभ हो गया है।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी 30 जुलाई को कही अपनी मन की बात में इस विषय की ओर देशवासियों का ध्यानाकर्षित किया है। आशा है इस अभियान को अपेक्षित गति मिलेगी। आइये ! अवांछनीय परम्पराओं को बदलने में जी-जान से जुट जायें। गणेशोत्सव एवं दूर्गापूजा पर्वों को पर्यावरण के अनुकूल मनाने के लिए जोरदार अभियान चलायें।

- प्लास्टर ऑफ पेरिस की प्रतिमाओं का प्रयोग नहीं करेंगे। **नोट**-भारत की सनातन परम्परा में मिट्टी और पत्थर की मूर्तियों की प्रतिष्ठा और स्थापना का विधान है।
- जहरीले रंग-रसायनों के प्रयोग से बचेंगे।
- प्रतिमाओं का पवित्र जलाशयों में नहीं, विशेष कुण्डों में विसर्जन करेंगे।
- फूल और पूजा के सामान का प्रयोग खाद बनाने में करेंगे।
- ध्वनि प्रदूषण और फूहड़ कार्यक्रमों से बचेंगे।

सभी शक्तिपीठ, शाखाओं से अनुरोध है कि इसके लिए अविलम्ब जनजागरण एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रम आरंभ कर दें।

नव सृजन युवा संकल्प समारोह
श्री उमिया धाम, नागपुर
दिनांक 26, 27, 28 जनवरी 2018

ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन कीजिए

जिस ओर जवानी जाती है, उस ओर जमाना जाता है। इस कथ्य के अनुरूप देश और दुनिया में युग परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार ने वर्ष 2016 एवं 2017 को युवा क्रांति वर्ष के रूप में मनाया। इन दो वर्षों में पूरे देश में भावनाशील, जाग्रत् युवाओं को खोजने एवं तराशने का एक बृहद् अभियान चला। लाखों युवा नव सृजन अभियान से जुड़े, उनकी सृजनात्मक शक्ति और देशभक्ति को समाज के नवनिर्माण कार्यों में लगाया गया। इन सृजनशील युवाओं के साथ मिशन आने वाले दिनों में नयी शक्ति और नयी योजनाओं के साथ आगे बढ़ेगा। अब तक की उपलब्धियों और भावी योजनाओं के लिए हम सबको एकजुट होना है और नये संकल्पों के साथ आगे बढ़ना है।

26, 27 एवं 28 जनवरी 2018 को नागपुर के उमिया धाम में युवा क्रांति वर्ष का समापन समारोह बृहद् स्तर पर मनाया जायेगा। समस्त जाग्रत् आत्माओं को इसमें भाग लेने का भावभरा आमंत्रण है। विस्तृत जानकारियों और ऑन लाइन रजिस्ट्रेश के लिए नीचे दी गयी लिंक को लॉगऑन करें।

http://diya.net.in/yss
www.awgp.org/yss

**यौवन जीवन का वसंत है।
युवा देश का गौरव हैं।**

गुजरात और राजस्थान के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में अहर्निश सक्रिय है गायत्री परिवार का आपदा प्रबंधन दल

जुलाई के अंतिम सप्ताह में गुजरात और राजस्थान ने बाढ़ का ऐसा तांडव देखा, जिसकी किसी को कल्पना भी नहीं थी। सर्वाधिक प्रभावित हुए गुजरात के बनासकाँठा और राजस्थान के जालौर एवं सिरोही जिले। गाँव के गाँव पानी में डूब गये। सड़कें टूट जाने से जनसंपर्क टूट गया। मवेशियों का अता-पता नहीं। खेती पूरी तरह से बरबाद हो गयी। कच्चे मकान ढह गये। घरों में छाती तक पानी आ जाने के कारण हजारों परिवारों को न जाने कितनी रातें छत पर बितानी पड़ी होंगी। न भोजन का ठिकाना और न पानी का। वाहन बह गये। घर का सारा सामान नष्ट हो गया।1 अगस्त को समाचार लिखे जाने तक अकेले गुजरात में लगभग 250 लोगों के मारे जाने के समाचार मिल रहे हैं।

गायत्री शक्तिपीठ डीसा बना बेस कैम्प

अखिल विश्व गायत्री परिवार आपदा की हर घड़ी में अविलंब सक्रिय हो जाता है। गुजरात में भी ऐसा ही हुआ। आद. जीजी ने शांतिकुंज में कार्यकारिणी तथा आपदा प्रबंधन के सदस्यों से विचार विमर्श किया। कनाडा यात्रा पर गये आद. डॉ. साहब की सहमति के साथ 26 जुलाई से राहत कार्य आरंभ कर दिये गये।

गायत्री परिवार ओढव, अहमदाबाद शाखा के श्री मीठाभाई के नेतृत्व में चेतन भाई, चिराग व्यास, लक्ष्मण भाई, प्रकाश ठक्कर, चिराग शाह, मोहनभाई, सुखदेवभाई माली आदि 30 युवाओं का दल भारी मात्रा में राहत सामग्री लेकर 26 जुलाई को डीसा पहुँच गया था। वे अपने साथ 2 ट्रक भरकर भोजन सामग्री, पानी की बोतलें, कपड़े, दवाइयाँ एवं एम्बुलेंस लेकर गये थे।

ओढ़व, डीसा और मालगढ़ के कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों और सेवाभावी परिजनों के सहयोग से भोजन पैकेट्स तैयार किये जाने लगे। गुजरात की अनेक शाखाओं के कार्यकर्त्ता जुटने लगे, राहत सामग्री पहुँचने लगी। युद्ध स्तर पर राहत कार्य आरंभ कर दिये गये। जैसे ही बाढ़ का पानी थोड़ा उतरा, परिजन जरूरतमंदों तक भोजन, पानी, कपड़े, दवाइयाँ आदि लेकर पहुँचाने लगे।

समाचार लिखे जाने तक डीसा शक्तिपीठ पर 350 कार्यकर्त्ता राहत एवं बचाव कार्यों में जुटे हैं। 29 जुलाई तक विभिन्न क्षेत्रों से 15 ट्रक राहत सामग्री बेस कैम्प डीसा में पहुँच चुकी थी। बाढ़ से सबसे ज्यादा प्रभावित रहे डीसा से 150 कि.मी. दूर छेवाडा विस्तार तक राहत सामग्री लेकर कार्यकर्त्ता पहुँच रहे हैं।

गायत्री शक्तिपीठ डीसा पर राहत सामग्री के पैकेट्स तैयार करती बहनें

शांतिकुंज प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में चल रहा है राहत कार्य

आदरणीया शैल जीजी ने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की, दिवंगतों की आत्माओं की शांति-सद्गति के लिए प्रार्थना की।

शांतिकुंज में आदरणीया शैल जीजी ने 29 जुलाई को आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श करते हुए गुजरात और राजस्थान में चल रहे बाढ़ राहत कार्यों की समीक्षा की। लेखा विभाग प्रभारी श्री हरीश ठक्कर, श्री विष्णु मित्तल, आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ प्रभारी श्री राकेश जायसवाल, गुजरात-राजस्थान जोन प्रभारी श्री दिनेश पटेल आदि इस चर्चा में शामिल हुए। इस गोष्ठी में राहत कार्यों के पश्चात पीड़ितों के पुनर्वास की योजनाओं पर भी चर्चा की गयी, योजना बनायी गयी। आदरणीया जीजी ने इस त्रासदी में मारे गये लोगों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की, मृतात्माओं की शांति-सद्गति के लिए प्रार्थना की।

आदरणीया जीजी के निर्देश पर उसी दिन शांतिकुज से गुजरात और राजस्थान के लिए आवश्यक राहत सामग्री साथ लेकर एक-एक दल रवाना कर दिया गया। श्री विष्णु मित्तल और श्री सुखदेव अनघोरे राजस्थान के लिए और श्री राकेश जायसवाल एवं श्री दिनेश पटेल गुजरात के लिए रवाना हुए।

साँचोर में है जालौर और सिरोही जिले का बेस कैम्प

राजस्थान के जालौर जिले के साँचोर में बेस कैम्प बनाया गया है। श्री महेन्द्र सिंह के नेतृत्व में लगभग 250 कार्यकर्त्ता वहाँ सेवा कार्यों में जुटे हैं। अहमदाबाद, गुजरात से डॉ. भीखूभाई पटेल के नेतृत्व में चिकित्सक एवं पैरामेडिकल स्टाफ एक एम्बुलेंस के साथ वहाँ सेवारत है।

90 लाख रुपयों की सामग्री बाँटी गयी

1 अगस्त 2017 को समाचार लिखे जाने तक गुजरात के बेस कैम्प डीसा द्वारा जरूरतमंदों में 90 लाख रुपयों से ज्यादा की राहत सामग्री वितरित कर दी गयी है। यह सामग्री अहमदाबाद की ओढव, ईसनपुर, घोडासर, शाहीबाग, राणीप, बापूनगर, नरोडा, इण्डिया कॉलोनी शाखाओं के अलावा वडोदरा, सूरत, गाँधीनगर, डीसा, मालगढ़, कांकरेज, थराद, पाटण, हिम्मतनगर, राधनपुर, धानेरा, दियोदर, डीसा, माणसा, समी, वाव, दाहोद, कलोल, लिमड़ी, सुरेन्द्रनगर, विजापुर, पालनपुर, सुईगाम, लाखणी, वाराही आदि शाखाओं द्वारा अपने आसपास के मुहल्ले, गाँव, नगरों में जन-जन से सम्पर्क कर जुटाई और बेसकैम्प गायत्री शक्तिपीठ डीसा को भेजी गयी है। इन्हीं शाखाओं के सैकड़ों कार्यकर्त्ता बाढ़ राहत कार्यों में जुटे हैं, गाँव-गाँव जाकर पीड़ितों की सेवा कर रहे हैं। गायत्री तीर्थ अंबाजी जैसी अनेक शाखा-शक्तिपीठें सीधे भी बाढ़ प्रभावितों की सेवा में जुट गयी हैं।

1 अगस्त तक वितरित किये
10,00,000 भोजन के पैकेट,
5,00,000 पानी की बोतलें,
2,00,000 लोगों को कपड़े और
1,50,000 राशन के पैकेट
(न्यूनतम 7 दिनों के लिए)

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में जाकर राहत सामग्री वितरित करते परिजन

250 परिवारों की मदद की

अम्बाजी। गुजरात : गायत्री तीर्थ अंबाजी ने तत्काल राहत कार्य आरंभ कर दिये। उनके द्वारा लाखड़ी तहसील के रामपुरा और गोछा गाँव में 200 किलो सूखड़ी और नमकीन, बिस्किट के पैकेट बाँटे गये। शक्तिपीठ कार्यवाहक श्रीमती डाह्यीबेन पटेल के अनुसार ग्राम सरपंच केशाभाई जाट और प्राथमिक शाला के शिक्षकों के सहयोग से दोनों गाँवों के 250 परिवारों में यह राहत सामग्री वितरित की गयी।

2000 परिवारों के लिए कपड़े भिजवाये

गाँधीनगर। गुजरात : गायत्री परिवार गाँधीनगर ने लगभग ढाई लाख रुपये की राहत सामग्री गायत्री परिवार के बेस कैम्प तक पहुँचायी। उन्होंने पुरुषों के 5000 नये-पुराने कपड़े, बहिनों के लिए 2000 साड़ियाँ, 2000 सूट, 1250 बच्चों के कपड़े, 1000 ऊनी कपड़े राहत कैम्प तक पहुँचाये। गाँधीनगर शाखा द्वारा 100 किलो अनाज और 300 लोगों के भोजन पैकेट भी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए रवाना किये।

उदार अंतःकरण से सहयोग करें

पीड़ित मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। मानवता पर आये भीषण संकट की इस घड़ी में गुजरात और राजस्थान ही नहीं पूरे देश में बाढ़ पीड़ितों की भरपूर सेवा करें। आप शांतिकुंज के माध्यम से सीधे पीड़ित-प्रभावितों तक अपनी सहायता पहुँचा सकते हैं। अपनी सहयोग राशि शांतिकुंज के आपदा राहत कोश के निम्न खाते में जमा करा सकते हैं। जमा की गयी राशि की जानकारी पत्र, ई-मेल आदि से शांतिकुंज को अवश्य दें।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - खा.सं. **30491675367**
IFSC : SBIN0002350

मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण

गुरुपूर्णिमा 2017 से 2026 तक चलने वाला एक महान अनुष्ठान

गायत्री महामंत्र लेखन का विराट अभियान

सवा पाँच करोड़ मंत्र लेखन का संकल्प आधे से ज्यादा पूरा हो चुका है

खण्डवा। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खंडवा ने मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण के अंतर्गत गायत्री महामंत्र लेखन अभियान के माध्यम से गायत्री के तत्त्वदर्शन को गाँव-गाँव, घर-घर तक पहुँचाने का बृहद् अभियान आरंभ किया है। इसके अंतर्गत पूरे खंडवा जिले में 5,25,00,000 महामंत्र लिखवाने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से आधे से अधिक मंत्रलेखन कार्य तो अब तक पूरा भी हो गया है। इस अभियान ने जिला संगठन में गज़ब के प्राण फूँके हैं।

श्री बृजेश पटेल के अनुसार दैवयोग और समर्पित कार्यकत्ताओं के नैष्ठिक प्रयासों से यह अभियान जिले में खूब लोकप्रिय हुआ। कुल 60 हजार मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ मँगायी गयीं। गायत्री जयंती से पूर्व उन्हें वितरित करने के लिए शक्तिपीठ खंडवा पर एक गोष्ठी की गयी। पूरे जिले के 750 कार्यकर्त्ताओं ने उसी दिन संकल्प पूर्वक 30 हजार पुस्तिकाएँ ले लीं और अपने यहाँ घर-घर जाकर वितरित कर दीं।

गायत्री जयंती 4 जून से मंत्रलेखन अभियान आरंभ हुआ और गुरुपूर्णिमा-9 जुलाई तक ये सारी पुस्तकें लिखवाकर वापस एकत्रित भी कर ली गयी थीं। शेष 30 हजार पुस्तिकाओं के लेखन का अभियान भी शीघ्र ही पूरा कर लिया जायेगा। शक्तिपीठ खंडवा, छैगाँवमाखन, मूँदी, पंधाना और चेतना केन्द्र टेमीखुर्द, पुनासा, खालवा, सिंगोर, बोराडीभाल, कोलगाँव, बोगरदा, नर्मदा नगर, गाँधवा, रोशनहार, आरूद, गोराडिया, सोमगाँव, बोरगाँव बुजुर्ग, भिगाँवाँ, चमाटी, अंबासेल, बरूड़, काकरिया, सिरसौद, भगाँवाँ, धनगाँव, डाभी, सुकवी, भोगाँवाँ, सुरगाँव, बेजारी, पनालीभाल, बड़गाँवमाली, सालई, हरसूद, आबूद के प्रज्ञा-महिला मण्डलों ने इस अभियान को गति देने में राम के रीछ-वानरों जैसा उत्साह दिखाया। 25 से अधिक मंत्रलेखन कराने वालों को पुरस्कार स्वरूप टेबल कैलेण्डर भेंट किये जा रहे हैं।

जनमानस में छाई आस्था की झलकियाँ

- एक मजदूर बहिन ने 250 पुस्तिकाएँ लीं और घर-घर जाकर लिखवायीं।
- कई अनपढ़ भाई-बहिनों ने भी मंत्रलेखन किया, जो आश्चर्यजनक है।
- बड़ी संख्या में परिवारी जनों ने 24000 मंत्र लेखन किये।
- 6 वर्ष के बालक से लेकर 90 वर्ष तक के बुजुर्गों ने मंत्रलेखन साधना की। बड़ी श्रद्धा के साथ मंत्र लिखने में जुट गये हैं।
- अनेक शक्तिपीठ-शाखाओं में सामूहिक मंत्रलेखन कराये जा रहे हैं।
- विद्यालयों में विद्यार्थियों से 2-2 पेज मंत्र लेखन कराये।

प्रज्ञा अभियान के सदस्यों के लिए विशेष सुविधा

30 से अधिक प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेंगी

डाक विभाग की अनियमितता के कारण प्रज्ञा अभियान की एक-दो प्रतियों के ग्राहकों तक नहीं पहुँचने की शिकायतें प्रायः मिलती रही हैं। अतः परिजनों से एकट्ठे रजिस्टर्ड डाक से इसे मँगाने का अनुरोध बार-बार किया जाता रहा है।

अब शांतिकुंज ने परिजनों की सुविधा के लिए निर्णय लिया है कि पाक्षिक की 30 या उससे अधिक प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेंगी। इससे पूर्व 50 या अधिक प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से जाती थीं।

हर शाखा-शक्तिपीठ एवं ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित परिजनों से निवेदन है कि न्यूनतम 30 या उससे अधिक पाक्षिक मँगाये, इसे हर भावनाशील परिजन-कार्यकर्त्ताओं तक पहुँचायें।

काँवड़ियों को भक्ति की सार्थकता का संदेश दिया

पाकिस्तानी शिवभक्तों ने वृक्ष लगाये, काँवड़ से जल लाकर किया सिंचन

श्रावण मास में शिवभक्त काँवड़ में गंगाजल भरकर सैकड़ों किलोमीटर तक की पदयात्रा करते हुए बड़ी श्रद्धा के साथ उसे अपने नगर-गाँव में भगवान भोलेनाथ का अभिषेक करने ले जाते हैं। व्यक्ति की आस्था का तो कोई पर्याय नहीं है, लेकिन यदि विवेक अपनाया जाये और अपने पुरुषार्थ का सुनियोजन करने का संकल्प लिया जाये तो अपनी श्रद्धा का बेहतर पोषण और मानवता का कल्याण हो सकता है।

हरिद्वार। उत्तराखंड

20 जुलाई को पाकिस्तान के शदाणी दरबार सिंध प्रान्त से 94 अनुयायी शदाणी दरबार, रायपुर, छत्तीसगढ़ के पीठाधीश संत श्री युधिष्ठिर लाल जी के नेतृत्व में अपने हरिद्वार स्थित आश्रम में आये। उनकी इस यात्रा को चिर स्मरणीय बनाने के लिए शांतिकुंज और शदाणी दरबार के तत्त्वावधान में आश्रम के समक्ष गंगातट पर स्थित संत शदाणी घाट पर सामूहिक वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम में शदाणी दरबार, रायपुर (छत्तीसगढ़) के 30 भक्तगण, हरिद्वार स्थित आश्रम के व्यवस्थापक श्री अमर शदाणी, युवा प्रकोष्ठ शांतिकुंज के प्रतिनिधि श्री सदानंद आंबेकर, श्री जयराम मोटलानी, श्री योगेश पाटिल, पं. अंबादत्त पंत और श्री एन.एस. कुन्द्रा, राजस्व अधिकारी, सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश भी शामिल हुए। शांतिकुंज द्वारा शदाणी दरबार को निःशुल्क उपलब्ध कराये गये 100 पौधे गंगातट के समीप रोपे गये।

शदाणी दरबार के अनुयायी शिवभक्त होते हैं। उन दिनों हरिद्वार में लाखों शिवभक्त काँवड़िये उपस्थित थे। पाकिस्तानी अतिथियों के माध्यम से उन सबको सच्ची भक्ति का मर्म सिखाने के प्रयास शांतिकुंज द्वारा किये गये। उन्हें बताया गया कि वृक्ष भी शिव स्वरूप होते हैं, जो पर्यावरण का विष पीते और मानव को अपने अनंत अनुदान देते रहते हैं। काँवड़िये जितनी श्रद्धा और श्रम अपने इष्ट देव शिव पर गंगाजल चढ़ाने में लगाते हैं, उतनी श्रद्धा और श्रम से गर्मी के दिनों में वृक्षों को सीचें और वृक्ष लगायें तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का सहज समाधान हो सकता है। तब निश्चित ही भगवान आशुतोष उनकी श्रद्धा-भावना का फल पहले से कहीं अधिक प्रदान करेंगे।

इस प्रेरणा से शदाणी दरबार के संत श्री युधिष्ठिर लाल जी एवं श्री अमर शदाणी जी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने स्वयं कंधे पर काँवड़ ली और वृक्षों को सींचा। शांतिकुंज प्रतिनिधि भी काँवड़ यात्रा में शामिल हुए।

शांतिकुंज आया पाकिस्तानी दल

शदाणी दरबार के समस्त अनुयायी शांतिकुंज की प्रेरणाओं से बहुत प्रभावित हुए। वे सभी सायंकाल शांतिकुंज आये। गुरुस्मारकों पर आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, सुश्री दीना त्रिवेदी ने उन्हें संबोधित किया। उन्होंने विश्व की वर्तमान समस्याओं का सहज समाधान करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के जीवन आदर्श और विचारों से परिचित कराया। श्री जयराम मोटलानी एवं श्रीमती नीलम मोटलानी ने उन्हें शांतिकुंज का दिग्दर्शन कराया, यहाँ की विशेषताएँ बतायीं।

शदाणी दरबार, रायपुर के पीठाधीश संत श्री युधिष्ठिर लाल जी काँवड़ में लाया गया गंगा-सिंधु का जल शिवस्वरूप वृक्षों को अर्पित करते हुए

दो श्रवण कुमारों के पुरुषार्थ से उपजा बृहद् अभियान

प्रज्ञा अभियान के 1 अगस्त 2017 के अंक में पृष्ठ 3 पर 'भीषण गर्मी में काँवड़ से सींचे अपने गाँव के वृक्ष' शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ। श्री गोपाल साहू एवं श्री मेकूराम निषाद के इस पुरुषार्थ से दैनिक अमर उजाला, मुरादाबाद के उप समाचार संपादक श्री कुमार अतुल बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने ऐसे ही कार्यों से काँवड़ यात्रा की वर्तमान परम्परा को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप परिष्कृत करने का प्रयास करने का अनुरोध शांतिकुंज प्रतिनिधि से किया। वॉट्सएप के माध्यम से संदेश पूरे देश में पहुँचाया गया। इसी क्रम में शांतिकुंज द्वारा यह प्रेरक कार्यक्रम आयोजित गया।

काँवड़ संघ और जिला प्रशासन ने सराहा प्रस्ताव

गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद के सदस्य श्री एल.के. त्यागी, डॉ. लवलेश और श्री हरीश वर्मा द्वारा नगर के समस्त काँवड़ संघों के साथ हुई जिलाधिकारी एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारियों की गोष्ठी में यह प्रस्ताव रखा गया, जिसे सभी ने सराहा। इस आशय के समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुए। सभी काँवड़ संघों ने श्रावण मास के चौथे सोमवार को काँवड़ियों द्वारा अपनी लायी काँवड़ से पहले भगवान आशुतोष का अभिषेक करने और फिर बचे जल से वृक्षों को सींचने का सांकेतिक कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

गर्मियों में हों वृक्षों को बचाने के प्रेरणादायी कार्यक्रम

गर्मी के दिनों में शिवभक्त काँवड़यात्रा के प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित करें, अपने क्षेत्र के ही नदी, तालाब आदि जलाशयों से सामूहिक रूप से जल लाकर अपने क्षेत्र में लगे पेड़-पौधों का अभिसिंचन करें तो वृक्षारोपण की तरह वृक्षों को सूखने से बचाने का बहुत बड़ा अभियान चल पड़ेगा।

वृक्षारोपण के 350 सप्ताह पूरे, लगाये 35000 पेड़

कोलकाता। पश्चिम बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने अपने अखण्ड रविवासरीय पर्यावरण संरक्षण-वृक्षारोपण अभियान का 350वाँ सप्ताह 16 जुलाई को आरामबाग, पारूल, बिक्रमपुर स्थित श्री श्री बिसालखि मंदिर में वृक्षारोपण करते हुए मनाया। इसमें स्थानीय विधायक श्री कृष्ण चंद्र सांतरा, चेयरमैन श्री सपन नंदी, एस.डी.पी.ओ. श्री हरी कृष्णा पाई, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट श्री मृत्युंजय घोष सहित आई.सी., कृषि विभाग के अधिकारी, शिक्षाविद, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट सहित अनेक गणमान्यों ने भाग लेते हुए गायत्री परिवार के पर्यावरण प्रेम एवं मानवता के उत्कर्ष की प्रखर संकल्प शक्ति को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर कुल 2001 पेड़ लगाये गये। आरामबाग पुलिस स्टेशन में भी वृक्ष लगाये गये।

हर रविवार को वृक्षारोपण के अभियान में जुटे गायत्री परिवार यूथ ग्रुप के नैष्ठिक कार्यकर्ता

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राजेश काबरा, पंकज आपाटो, अनिल राजभर, गोकुल मूंदड़ा, प्रसेनजित राय, मीनू सिंह, सुरील बिहारी गुप्ता,पवन महतो,सच्चिदानंद पाण्डेय, रवि शर्मा इत्यादि का योगदान रहा।

जीपीवायजी, कोलकाता का पर्यावरण संरक्षण-वृक्षारोपण अभियान सन् 2010 से सतत चल रहा है। इसके अंतर्गत उन्होंने नगर के हर क्षेत्र को हरा-भरा कर दिया है। आसपास के उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगाना, नदिया, हावड़ा, हुगली जिलों में भी वृक्षारोपण और उनके संरक्षण का काम किया गया है। उन्होंने पिछले 350 सप्ताह में कुल 35000 वृक्ष रोपे हैं। मुख्य रूप से नीम, अशोक, सीता अशोक, राधाचूड़ा, कृष्णचूड़ा, फलदार एवं औषधीय गुणों वाले वृक्ष इस क्रम में लगाये गये हैं।

यह अभियान 3-4 युवाओं से आरंभ हुआ था। आज हजारों युवा भाई-बहन इस अभियान में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं।

अर्थ डे नेटवर्क, भारत नामक संस्था ने जीपीवायजी कोलकाता को गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी कोलकाता शहर को हराभरा बनाने में अग्रणी योगदान देने के लिए प्रमाणपत्र प्रदान किया है।

गुरुपर्व पर मुंबईवासियों की अद्वितीय श्रद्धांजलि

19 कार्यक्रम आयोजित कर हजारों लोगों को आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी

मुम्बई। महाराष्ट्र :
जीवन को सही दिशा देकर उसे महानता के पथ पर अग्रसर करने वाले सद्गुरु के प्रति श्रद्धा के आरोपण, संवर्धन का पर्व है गुरुपूर्णिमा। इस पर्व का प्रयोजन पूरा करने के लिए गुरुपूजन, गुरुस्मरण जैसे अनेक कर्मकाण्ड किये जाते हैं, लेकिन गुरु के निर्देशों का पालन करते हुए उनके पदचिह्नों का अनुसरण करना ही उनके प्रति श्रद्धा संवर्धन का, उनसे अनुग्रह-अनुदान पाने का श्रेष्ठतम उपाय है।

मुम्बई में दिया एवं अन्य संगठन-शक्तिपीठों से जुड़े सैकड़ों कार्यकर्त्ता इस दिशा में सदैव एक आदर्श प्रस्तुत करते रहे हैं। सांसारिक प्रलोभनों में फँसने की अपेक्षा वे सदैव मानवता का पथ प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित रहे हैं। उन्हें आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने और सबके हित में अपना हित समझने के लिए प्रेरित-सहमत करते रहे हैं।

गुरुपूर्णिमा पर्व पर

गुरुपूर्णिमा पर्व पर भी मुम्बई के परिजनों ने सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत किया। प्रबुद्ध जनों के बीच, शैक्षिक संस्थानों में और विविध आवासीय क्षेत्रों-प्रज्ञा केन्द्रों में उनके द्वारा कुल 19 कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये। 8 और 9 जुलाई को 10 कार्यक्रम सम्पन्न हुए, जिन्हें स्थानीय शाखा परिजनों ने सम्पन्न कराया। अणुशक्ति नगर, भिवंडी, अम्बरनाथ, भायंदर, दहिसर, मालाड, मेढेगाँव-वसई, नालासोपारा और पवई में आयोजित इन कार्यक्रमों में हजारों लोगों ने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़कर आदर्श जीवन जीने और विश्व कल्याण के महान अभियान में साझेदार होने की प्रेरणा पायी।

16 से 19 जुलाई की तारीखों में बृहद् स्तर के 9 कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिन्हें सम्पन्न कराने शांतिकुंज से वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. ओ.पी. शर्मा एवं डॉ. अशोक ढोके की टोली पहुँची थी।

गड़करी रंगायतन, ठाणे में आयोजित गुरुपूर्णिमा महोत्सव को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा

गड़करी रंगायतन में

गायत्री प्रज्ञा केन्द्र ठाणे ने पिछले 10 वर्षों की तरह ही इस बार भी गड़करी रंगायतन सभागार में बृहद् कार्यक्रम आयोजित किया था। 700 लोगों ने इसमें भाग लिया। डॉ. विकास सिन्हा, कस्टम कमिश्नर, मुम्बई और उनकी धर्मपत्नी तथा स्वयंसेवी संस्था 'यशस्विनी' की संस्थापक श्रीमती दर्शना दामले कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। केन्द्रीय प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा ने 'युगऋषि का जीवन दर्शन' एवं डॉ. अशोक ढोके ने 'परिवर्तन के महान क्षण' विषयों पर उद्बोधन दिये। देवकन्याओं के प्रज्ञागीत और देसंविवि के पूर्व विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत लयबद्ध योग ने सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम के आयोजन में श्री जतीन दवे, उपेन्द्र चौबे एवं जागृति बेन ने प्रमुख दायित्व निभाये।

सम्मान - इस कार्यक्रम में केन्द्रीय प्रतिनिधियों द्वारा कन्नड़ में पू.गुरुदेव के साहित्य का अनुवाद करने वाली बहिन कु. शेट्टी, ज्ञानयज्ञ में उत्कृष्ट कार्य करने वाले श्री शिवकुमार एवं युवा वैज्ञानिक श्री दिनेश पटेल का सार्वजनिक सम्मान किया गया।

वैज्ञानिकों के बीच

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के सी.सी. ऑडिटोरियम में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों एवं गणमान्यों के बीच 'उद्देश्यपूर्ण जीवन कैसे जियें?' विषय पर उद्बोधन हुआ। श्री वाय.के. टली, चेअरमैन, सेफ्टी काउंसिल, श्री पी. गोवर्धन, कंट्रोलर एवं डॉ. डी.एन. बडोदकर, श्री ऋषिकेश मिश्रा, श्री नरेन्द्र कुमार करनानी, श्री सत्यप्रकाश प्रभाकर, श्री ए.एन. वर्मा आदि गणमान्य प्रमुख आमंत्रित अतिथि थे। डॉ. डी.जी. जोसफ द्वारा तीन बार गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्रोताओं ने तीन मिनट तक लगातार ताली बजाकर गायत्री महामंत्र पर उनकी आस्था का अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. डी. आर. यादव एवं श्री हितेश जोशी का मुख्य योगदान था।

शिक्षण संस्थानों में

रामनारायण रुइया कॉलेज एवं पोददार कॉलेज में 'ह्यूमन एक्सीलेंस' विषय पर उद्बोधन हुए। सैकड़ों विद्यार्थियों ने दिया, मुम्बई के साथ कार्य करने की इच्छा व्यक्त की।

भारत कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स तथा एयरसन इंग्लिश स्कूल में कार्यक्रम आयोजित हुए। डॉ. अशोक ढोके एवं डॉ. वरुण मानेक ने इन्हें संबोधित करते हुए जीवन प्रबंधन के मार्मिक सूत्र समझाये। उनसे प्रभावित होकर प्राचार्य शबनम शेख ने आगामी शिक्षक दिवस पर विशेष सेमीनार रखने का मन बनाया।

हॉस्पिटल में

क्यूरे हॉस्पिटल के अधिकारी एवं पैरामेडिकल स्टाफ को सेवा भावना और अच्छे व्यवहार के प्रभाव से अवगत कराया गया।

कारागार में

आधारवाड़ी कल्याण कारागार में 'देवत्व का विकास कैसे करें?' विषय पर उद्बोधन हुआ। इससे प्रभावित होकर जेलर श्री भोंसले जी ने गायत्री परिवार के सहयोग से कारागार में योग एवं संगीत की कक्षाएँ चलाने तथा रक्षाबंधन समारोह आयोजित करने का मन बनाया है।

प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ.ज्योति कोटक, मनोवैज्ञानिक डॉ. शशि राय, उद्योगपति श्री कैलाश अग्रवाल एवं डॉ. भारती हल्दीकर के आवास पर भी गोष्ठी-दीपयज्ञ आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

सामूहिक साधना और यज्ञ अभियान की निरंतर लोकप्रियता बढ़ रही है

151 घरों में यज्ञ, साधना एवं देवस्थापना

उज्जैन। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन ने मालवा-निमाड़ क्षेत्र में लोकप्रिय हो रही सामूहिक यज्ञ योजना को गति देते हुए 151 कुण्डीय यज्ञ का अत्यंत प्रभावशाली आयोजन किया। इस कार्यक्रम में शक्तिपीठ के सवा किलोमीटर की परिधि के 151 घरों में एक ही दिन, एक ही समय पर गायत्री यज्ञ कराये गये, जिनमें परिवारी जन, पड़ोसी और मित्रों सहित 3000 से अधिक लोगों ने आत्मकल्याण एवं लोकमंगल की भावना के साथ यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित कीं। पूरा क्षेत्र यज्ञमय हो गया। उज्जैन जिले की विभिन्न शाखाओं के अलावा शाजापुर और आष्टा जिलों के कार्यकर्त्ता इन यज्ञों के संचालन के लिए पहुँचे थे।

इन यज्ञों में लोगों को गुरुदेव के विचार और संस्कार परम्परा से जोड़ने के प्रयास हुए। जन-जन को उपासना, स्वाध्याय के साथ वृक्षारोपण करने, घर के आसपास सफाई रखने, कूड़े का उचित निस्तारण करने, बच्चों को बाल संस्कार शालाओं में भेजने जैसी प्रेरणाएँ प्रमुखता से दी गयीं, संकल्प कराये गये।

अभियान संयोजक डॉ. शशिकांत शास्त्री के अनुसार गायत्री चेतना और यज्ञ अभियान के विस्तार का यह बहुत ही सुंदर और प्रभावशाली प्रयोग सिद्ध हो रहा है। इतने ही लोगों तक मिशन का संदेश पहुँचाने के लिए यदि 151 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया जाता तो 6 से 8 लाख रुपये व्यय होता और प्रचार-प्रसार में खूब सारी श्रमशक्ति लगानी पड़ती। घर-घर यज्ञ योजना से लोगों के साथ निकट आत्मीयता और संबंधों में घनिष्ठता बढ़ती है। प्रत्येक परिवार 300-400 रुपये का खर्च वहन करते हुए इसे सहजता के साथ सम्पन्न करा लेता है।

बालाघाट। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ प्रेमनगर बालाघाट पर 25 जून को अंतरप्रांतीय जोन, उपजोन समन्वयकों की संगठनात्मक कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें दिसम्बर 2017 तक के कार्यक्रमों का निर्धारण हुआ।

बालाघाट जिले ने गुरुपूर्णिमा से पूर्व 25 जून से 9 जुलाई तक 15 दिवसीय सामूहिक साधना अनुष्ठान आरंभ किया। 25 जून को 151 घरों में पारिवारिक साधना, तत्पश्चात् यज्ञ के कार्यक्रम एक ही दिन, एक ही समय पर आयोजित हुए। गोष्ठी में पधारे समस्त जिला प्रतिनिधियों ने इन्हें सम्पन्न कराने में योगदान दिया। सभी 151 घरों में देवस्थापनाएँ की गयीं।

आमगाँव, गोंदिया। महाराष्ट्र
गायत्री परिवार गोंदिया द्वारा 3 से 7 जून तक सालेकसा तालुका में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम ने क्षेत्र में यज्ञ अभियान के विस्तार की चेतना जगायी है। ठीक एक माह बाद परिजनों ने 24 घरों में एक ही समय पर, एक ही दिन गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये।

श्री गायत्री व्रत कथा अभियान

2400 कथाओं का है संकल्प
600 आयोजन सम्पन्न
500 पत्रिकाओं के सदस्य बने

श्री गायत्री व्रत कथा का लेखन-संपादन स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री विद्यासागर नामदेव ने किया है।

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश
युगशक्ति गायत्री प्रज्ञा मंडल पातालेश्वर द्वारा 2400 घरों में श्री गायत्री व्रत कथा एवं एक कुंडीय यज्ञ आयोजन करने का संकल्प लिया गया है। इसके तहत क्षेत्र में अब तक 600 से अधिक स्थानों में यह आयोजन बड़े उत्साह पूर्वक संपन्न हो चुके हैं। इन आयोजनों के माध्यम से जहाँ एक ओर बड़ी संख्या में श्रद्धालुजनों ने कथा श्रवण कर यज्ञ का पुण्यलाभ अर्जित किया, वही दूसरी ओर इससे प्रभावित होकर 500 लोगों ने अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण की।

ग्यारह हजार पुस्तकें बाँटीं

एक कुण्डीय यज्ञ सहित लगभग डेढ़ घंटे और नाम मात्र के खर्च में संपन्न हो जाने वाली यह पावन कथा क्षेत्र में बड़ी लोकप्रिय हो रही है। इससे प्रेरित होकर प्रज्ञामंडल के कार्यकर्त्ता श्री बसंत यादव, श्री शम्भू प्रसाद धुर्वे, श्री यशवन्तराव पाठे, श्री पचकोड़ी लाल उईके, श्री दयाराम यादव, श्री तरूण कुशवाह, श्रीमती कमला मथुरिया, श्रीमती सरला मौर्य, श्रीमती मंगली विश्वकर्मा, श्रीमती शकुन्तला रैकवार एवं श्रीमती तुलसी यादव ने सत्यनारायण व्रत कथा की ग्यारह हजार प्रतियाँ छपाकर निःशुल्क वितरित कीं।

गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा

औरास, उन्नाव। उत्तर प्रदेश
ग्राम औरास में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज से श्री संदीप पाण्डेय की टोली 8 से 11 जून तक के इस चार दिवसीय कार्यक्रम को सम्पन्न कराने पहुँची थी। कार्यक्रम के साथ युग निर्माण सम्मेलन रखा गया, जिसमें सभ्य समाज के निर्माण के लिए विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने पर चर्चा हुई। लखनऊ से आयी गीतांजलि एवं पुष्पांजलि ने संगीतमय कथा के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर कर उपासना, साधना, आराधना से जीवन को श्रेष्ठ बनाने का आह्वान किया।

नवप्रतिष्ठित प्रतिमा के साथ प्रमुख कार्यकर्तागण

नवचेतना केन्द्र का भूमिपूजन

बलांगीर। उड़ीसा
गायत्री जयंती के पावन अवसर पर बलांगीर में नवचेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन सम्पन्न हुआ। स्थानीय लोकप्रिय परिव्राजक श्री रामप्रताप साहू ने इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराते हुए लोगों को परम पूज्य गुरुदेव की विचार धारा और उनके युग परिवर्तन जैसे महान उद्देश्यों से बड़े प्रभावशाली ढंग से अवगत कराया। परिणामस्वरूप चेतना केन्द्र-शक्तिपीठ निर्माण कार्य को गति मिली। श्री मगन पटेल ने वहाँ बोरिंग करा दी। कई लोगों ने परिसर में वृक्षारोपण करने-कराने के संकल्प लिये। भूमिपूजन समारोह में भूमिदानदाता श्री अशोक अग्रवाल, श्री सुशील अग्रवाल, श्री जगदीश अग्रवाल को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

भूमिपूजन के कार्यक्रम में हुए सत्संग ने विचार क्रांति की एक नयी धारा भी खोली है। एक कॉलेज के प्रोफेसर ने बलांगीर के सभी स्कूल-कॉलेजों में श्री रामप्रताप साहू का उद्बोधन रखवाते हुए नयी पीढ़ी को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से अवगत कराने का आश्वासन दिया है।

ज्ञानदीक्षा समारोह एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान

जोबट जिला, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्ति पीठ उमा. विद्यालय, जोबट का ज्ञानदीक्षा समारोह 8 जुलाई को हुआ। इसमें आचार्यों ने नव प्रवेशी विद्यार्थियों को स्कूली शिक्षा के साथ जीवन विद्या ग्रहण करने की प्रेरणा दी। उन्हें ज्ञानदीक्षा संकल्प के रूप में तिलक लगाकर रक्षा सूत्र बाँधे गये और प्रतीक रूप में मशाल के बैज प्रदान किये गये।

ज्ञानदीक्षा समारोह में विद्यालय के प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण कक्षा 10 एवं 12 के 37 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। कक्षा 5, 8, 10 और 12 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को श्री जगदीश आगाल सेवा निवृत जनरल मैनेजर बी.एच.ई.एल. दिल्ली की ओर से नगद पुरस्कार दिये गये। कक्षा10 और 12 में शत-प्रतिशत परिणाम देने वाले 8 शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया ।

शक्तिपीठ प्रबंधक डॉ. शिवनारायण ने बताया कि यह विद्यालय प्रतिवर्ष ज्ञानदीक्षा समारोह का आयोजन करता रहा है।

युवा शिविर व संस्कार शाला

धमतरी। छत्तीसगढ़
गायत्री शक्तिपीठ कुरूद पर आयोजित धमतरी जिले के कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी हुई। श्री दिलीप नाग के अनुसार कुरूद, झिरिया, गुदगुदा, मंदरौद, सिर्री, मरौद, करगा एवं आँवरी में एक दिवसीय युवा व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किये जायेंगे। कचना, गुदगुदा, मरौद, झुरानवागाँव, भैंसवोड, ढेठा, जीजामगाँव एवं कोण्डापार में बाल संस्कार शालाएँ आरंभ करने का निर्णय लिया गया है।

दिया, दिल्ली का यूथ ट्रांसफॉरमेशन अभियान

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

दिल्ली के मिशननिष्ठ युवा प्रत्येक रविवार को दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में अत्यंत प्रेरक कार्यक्रमों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये युवक-युवतियों को बड़ी कुशलता के साथ सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर रहे हैं। ये कार्यक्रम यूपीएसी, एसएससी तथा तमाम प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए दिल्ली में कोचिंग ले रहे विद्यार्थियों और उस क्षेत्र के कामकाजी युवाओं के लाभार्थ आयोजित होते हैं। मिशन निष्ठ युवाओं द्वारा

स्कूल, कॉलेजों, और छात्रावासों के निकट कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

11 एवं 18 जून को आयोजित कार्यक्रम योग दिवस के विशेष संदर्भ में आयोजित किये गये। इनमें भाग लेने वालों को मनुष्य की सुप्त अकूत शक्तियों की जानकारी दी गयी। बताया कि योग उन प्रसुप्त शक्तियों को जगाने की सर्वोत्तम विद्या है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति सफलता की सर्वोच्च ऊँचाई प्राप्त कर सकता है। लाभार्थियों को प्राणायाम एवं सामूहिक साधना का अभ्यास कराया। इनसे आत्मबल, आत्मविश्वास, इच्छाशक्ति, स्मरणशक्ति कैसे बढ़ते हैं, यह बताया गया। प्रेरक वीडियो दिखाये गये। कुछ टेबलों पर लगायी गयी पुस्तक प्रदर्शनी नवागंतुकों को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से परिचित कराने का प्रबल आधार थी।

मिशन के चिंतन से जुड़कर बन रहे हैं राज्य और राष्ट्रीय स्तर के तैराक

झाँसी। उत्तर प्रदेश

मेजर ध्यान चंद स्टेडियम के स्विमिंग पूल में 8 एवं 9 जुलाई को जिला स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रदेश के मंत्री श्री हरगोविंद कुशवाह ने इसका उद्घाटन किया।

झाँसी में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेने वाले नन्हे तैराक

प्रतियोगिता में बच्चों की प्रतिभा को देखकर वे आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने अपने संदेश में बच्चों की बढ़ती प्रतिभा को और निखारने के लिए हर प्रकार का सहयोग देने और झाँसी को एक पूरे आकार का स्विमिंग पूल देने का आश्वासन दिया।

इस स्विमिंग पूल में प्रतिदिन लगभग सौ बच्चे तैराकी सीखने आते हैं। गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता एवं राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तैराक श्री दीनदयाल मिश्रा 'नवयुग तैराकी संघ' के बैनर तले उन्हें निःशुल्क प्रशिक्षण देते हैं। श्री मिश्रा जी ने बताया कि वे बच्चों को तैराकी के तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ उनके खानपान, आचार-विचार, व्यवहार के परिष्कार का भी पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं, जिनसे उनकी लक्ष्य एकाग्रता और शारीरिक दक्षता निरंतर बढ़ती है।

8-9 जुलाई को हुई प्रतियोगिता में 8 वर्षीय प्रियांशु कुशवाहा ने 25 मीटर तैराकी में नया इतिहास रचा। उसका बड़ा भाई दीपांशु क्रमशः उत्तर प्रदेश एवं राष्ट्रीय तैराकी में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कर चुका है। नवयुग तैराकी संघ के प्रबंधक श्री रामबाबू वारी के पौत्र चि. विशाल जिला प्रतियोगिता जीती। वह भी उत्तर प्रदेश एवं राष्ट्रीय तैराकी में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कर चुका है। समारोह की मुख्य अतिथि डीआरएम की धर्मपत्नी श्रीमती रिचा मिश्रा के पौत्र आलोक ने 25 मीटर बटरफ्लाई रेस में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

श्री दीनदयाल मिश्रा जी बच्चों को ध्यान व व्यायाम कराते हैं, युग साहित्य पढ़वाते हैं, उन्हें नशा-मांसाहार जैसी हानिकारक वस्तुओं से परहेज करने की प्रेरणा देते हैं। समाज के सहयोग से बच्चों को ट्रैक सूट और अच्छी खुराक भी वे उपलब्ध कराते हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में चिकित्सकों की आवश्यकता है

• फिजियोथेरापिस्ट
• आयुर्वेद चिकित्सक (पंचकर्म/पुरुष वर्ग को प्राथमिकता)
• एम.बी.बी.एस/बी.ए.एम.एस. चिकित्सक (परामर्श हेतु)

सेवाभावी, अनुभवी व उपरोक्त योग्यता वाले इच्छुक परिजन अविलंब आवेदन करें। • भोजन एवं आवास आदि की सुविधा दी जायेगी।
• जीवन निर्वाह राशि विश्वविद्यालय के नियमानुसार देय होगी।

अधिक पूछताछ एवं आवेदन का पता :-
योग एवं स्वास्थ्य विभाग, द्वारा कुलसचिव कार्यालय
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार-249411, उत्तरा.
Email : career@dsvv.ac.in, provc@dsvv.ac.in

हल्द्वानी में विशाल साहित्य विक्रय केन्द्र और पुस्तकालय की स्थापना होगी

हल्द्वानी। उत्तराखंड

कार्यकर्त्ताओं के आपसी सहयोग और समर्पित प्रयासों से हल्द्वानी में एक विशाल साहित्य विक्रय केन्द्र और पुस्तकालय की स्थापना होने जा रही है। इसके लिए श्री देवेन्द्र सिंह रौतेला ने अपनी दो दुकानें, दो-दो कमरे वाले दो फ्लैट और एक 93X33 फीट का प्लॉट श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट को दान दिया है।

शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने दानदाता देवेन्द्र सिंह रौतेला का सम्मान किया

17 जुलाई को जिला सहकारी बैंक लि. के सभागार में जिले के प्रमुख 45 कार्यकर्त्ताओं की बैठक शांतिकुंज के लेखा विभाग प्रभारी श्री हरीश ठक्कर एवं श्री रामसहाय शुक्ला की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुई। उन्होंने श्री देवेन्द्र सिंह जी के समर्पण भाव की सराहना करते हुए उनका भावभरा सम्मान किया। कार्यकर्त्ताओं ने इस स्थान पर साहित्य विक्रय केन्द्र और पुस्तकालय बनाने का निर्णय लिया। एक भाई ने आलमारी सहित वाङ्मय साहित्य का सेट देने का संकल्प लिया।

पू. गुरुदेव के स्नेह की दिव्य अनुभूतियों के साथ किशोर पाटीदार ने ली चिर विदाई

महेश्वर, खरगोन। मध्य प्रदेश : ग्राम मेहतवाड़ा, महेश्वर निवासी श्री किशोर पाटीदार ने 25 जुलाई को शांतिकुंज में गायत्री माता मंदिर के दर्शन करते हुए देह त्याग दी। कभी बीमार न होने वाले 47 वर्षीय श्री किशोर जी का इस तरह विदा होना ऐसा लगा जैसे वे गुरुसत्ता के साथ एकाकार होने के लिए ही शांतिकुंज आये थे।

सच हुई गुरुदेव की वाणी

स्व. श्री किशोर जी 30 वर्ष पूर्व 11 वर्ष की अवस्था में लगभग 10 युवाओं के साथ शांतिकुज आये थे। प.पू. गुरुदेव से जब वे मिले तो गुरुदेव ने किशोर की ओर इशारा करते हुए कहा था, ''इस बच्चे को मेरे पास छोड़ जाओ।'' गुरुदेव की यह बात उन्हें जीवनभर स्मरण रही। वे शांतिकुंज तो नहीं आये, लेकिन गुरुकार्य होता रहे, आजीविका चलती रहे, इसके लिए दो ज्ञानरथ बनाये और अपने व आसपास के जिलों एवं मुम्बई तक के कार्यक्रमों में अपनी सेवाएँ देते रहे। गुरुकार्य ही उनका सिद्धांत रहा।

धर्मपत्नी ने पूरा कराया नेत्रदान का संकल्प

दैवयोग से उन्हें धर्मपत्नी संध्या और पुत्र अंकुर भी उन्हीं की तरह सेवाभावी, आदर्शनिष्ठ और मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित मिले। नितांत दुःख की घड़ियों में भी उन्होंने भरपूर साहस का परिचय दिया। अपने पति के अंगदान के संकल्प की याद दिलायी। हिमालयन हॉस्पिटल, जॉली ग्रांट की टीम ने उनके नेत्र लेकर दो जरूरतमंदों में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित कर दिये।

स्व. किशोर पाटीदार

मृत्यु से एक दिन पूर्व ही स्व. श्री किशोर जी ने अपने पूरे परिवार और रिश्तेदारों को एक साथ शांतिकुंज के दर्शन कराने की इच्छा व्यक्त की थी। उन्हें क्या पता था कि परम पूज्य गुरुदेव उनकी यह इच्छा इस प्रकार पूरी करेंगे। अंतिम संस्कार में उनके 90 परिवारी एवं प्रेमीजन शांतिकुंज आये। बेटे अंकुर और पत्नी संध्या ने ही सभी संस्कार किये।

दक्षिण अफ्रीका में गतिशील विचार क्रांति अभियान

विश्व योग दिवस में भागीदारी

योग दिवस के उपलक्ष में डॉ. श्रीनिवास, भारतीय कोंसुलेट जनरल, जोहानिसबर्ग द्वारा 14 से 25 जुलाई तक कई शालाओं और विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम रखे थे। उनके आमंत्रण पर गायत्री परिवार दक्षिण अफ्रीका ने 18 जुलाई को उद्घाटन कार्यक्रम, 21 जुलाई को लेनेशिया क्रिकेट स्टेडियम में विद्यार्थियों के कार्यक्रम और 25 जुलाई को ऐतिहासिक टॉलस्टॉय फार्म पर आयोजित समारोह में भाग लिया।

गायत्री आश्रम लैनेशिया में गुरुपूर्णिमा पर यज्ञ करते श्रद्धालु

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री राजेश भावसार ने समापन समारोह को संबोधित किया। उन्होंने स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन एवं सभ्य समाज की स्थापना में योग के योगदान पर अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम में महात्मा गाँधी रिमेम्ब्रेंस कमिटी द्वारा भारतीय मूल के नागरिकों के अलावा अफ्रीकी नागरिक और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया था।

तीन दिवसीय आत्मविकास कार्यशाला

गायत्री आश्रम लेनेशिया में युवाओं और बच्चों को भारतीय संस्कृति के प्रति सजग रहते हुए व्यक्तित्व विकास की सही दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा देने के लिए 4 से 6 जुलाई तक विशेष तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। श्रीमती गीता भावसार, श्री राजेश भावसार एवं स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री नवनीतभाई की बेटी रोशनी ने कक्षाएँ लीं। गायत्री मंत्र का महत्व और जप के लाभ, योग-सुपर ब्रेन योगा, प्राणायाम, सेल्फ डेवलपमेंट, माइंड डेवलपमेंट, सोल डेवलपमेंट, मेमरी पावर, सफलता की कुंजी, तनाव क्या है और उससे कैसे निपटा जाय? आदि विषय पर कक्षाएँ हुईं। 80 से ज्यादा लोगों ने भागीदारी की। पुस्तकों का स्टॉल लगाया गया, जिसमें 1000/- रेंड का साहित्य बिका।

वेबसाइट लॉञ्च हुई

गुरुपूर्णिमा पर्व 9 कुण्डीय यज्ञ के साथ मनाया गया, जिसमें 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर गायत्री परिवार साऊथ अफ्रीका की वेबसाईट www.awgpsouthafrica.org आरंभ करने की घोषणा की गयी।

उज्जवल भविष्य एवं विश्वशांति प्रार्थना के लिए प्रार्थना

गायत्री आश्रम लेनेशिया ने मानवमात्र के उज्जवल भविष्य एवं विश्वशांति के लिए घर-घर प्रार्थना का क्रम आरंभ किया है। इस क्रम में सप्ताह में दो या तीन दिन दोपहर दो घंटे की प्रार्थना सभाएँ विभिन्न घरों में आयोजित की जाती हैं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री नरेन्द्र दवे, शांतिकुंज, हरिद्वार

शांतिकुंज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री नरेन्द्र दवे का 18 जुलाई को 87 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे 1975 में मिशन से जुड़े और 1985 से ही सपत्नीक शांतिकुंज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। शांतिकुंज परिवार ने गुण निवेदन सभा आयोजित कर उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। सर्वश्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, बृजमोहन गौड़ जी, कालीचरण शर्मा जी आदि ने मिशन के प्रति उनके समर्पण भाव को याद किया।

श्री चेतराम रहबर, हिसार। हरियाणा

अपने मिशन की लगभग जितनी भी पुस्तकें उर्दू में अनुवादित हुई हैं, उन सभी के अनुवादक श्री चेतराम रहबर जी का 4 जून को 83 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे राष्ट्रीय ख्याति के उर्दू कवि और साहित्यकार थे। उप शिक्षा निदेशक के पद से सन् 1992 में सेवा निवृत्त हुए। हरियाणा उर्दू अकादमी द्वारा उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित की गयीं।

स्व. श्री चेतराम रहबर जी 1982 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद से पूर्ण रूप से समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप में मिशन का कार्य करते रहे। पुस्तकों के उर्दू अनुवाद के अलावा वे टोलियों में भी गये, बड़े-बड़े इस्लामी मंचों में आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी सहित कई शांतिकुंज प्रतिनिधियों के सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

श्री शरद कुमार द्विवेदी, जबलपुर। मध्य प्रदेश

मिशन के समर्पित कार्यकर्त्ता एवं हाईकोर्ट जबलपुर में अधिवक्ता श्री शरद कुमार द्विवेदी का 14 मई 2017 को देहावसान हो गया। परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेकर उनके बताये जीवन-आदर्शों को अपनाते हुए समाज की सेवा करने वाले स्व. श्री शरद जी न केवल एक अच्छे इंसान थे, अपितु एक अच्छे अधिवक्ता और कुशल तबला वादक भी थे। वे मैहर निवासी वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामलखन द्विवेदी के सुपुत्र थे।

श्री मोती सिंह बैस, दुर्ग। छत्तीसगढ़

गायत्री ज्ञान मंदिर कसारीडीह, दुर्ग में विगत 26 वर्षों से परिव्राजक के रूप में सेवाएँ प्रदान कर रहे श्री मोती सिंह बैस का 7 जुलाई को 83 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। इससे पूर्व वे बालोद में 12 वर्ष तक परिव्राजक रहे।

श्री बुधन साहू, लाँजी, गुमला। झारखंड

वरिष्ठ परिजन श्री बुधन साहू का 23 जून को 74 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। प्रत्येक रचनात्मक कार्य में बढ़चढ़कर भाग लेने वाले, गुरुदेव के विचारों को सरल लोकभाषा सादरी में गाँववासियों को सुनाने वाले बुधन जी अपने क्षेत्र में विशेष पहचान रखते थे, लोगों के विवाद सुलझाते थे।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, मंगलगिरि का प्रखर प्रयाज

अश्वमेध यज्ञस्थल पर अखण्ड जप में तीन जिलों की भागीदारी

गायत्री परिवार ट्रस्ट-मंगलगिरि के कार्यकर्त्ताओं ने चैत्र नवरात्र 2017 से ही अश्वमेध यज्ञस्थल पर पर्णशाला (कार्यालय) बनाकर अखण्ड गायत्री मंत्र जप का कार्यक्रम चला रखा है। गुण्टूर, कृष्णा एवं प्रकाशम् जिलों की अलग-अलग शाखाओं ने वहाँ एक-एक दिन जप, यज्ञ, सत्संग, भोजन प्रसाद आदि की व्यवस्था कर रखी है। श्री बीपी प्रसाद राव के प्रयासों से यह सारी व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से चल रही हैं, जो बिना चप्पल जूता पहने घर, दुकान छोड़ कर साधना एवं अश्वमेध यज्ञ के प्रचार अभियान को गति दे रहे हैं।

20 हजार नये घरों में देवस्थापना हुई

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ मंगलगिरि का प्रचार अभियान तिरुपति, नेल्लूर, ओंगोल, गुण्टूर, विजयवाड़ा, ईस्ट गोदावरी, वेस्ट गोदावरी, श्रीकाकुलम, विजयनगरम, विशाखापत्तनम, अनन्तपुर, कर्नूल, खम्मम, सिरपुर कागजनगर, निजामाबाद, करीमनगर, सिकन्द्राबाद, हैदराबाद, आदिलाबाद आदि जिलों में बड़ी तेजी से चल रहा है। इन जिलों में अब तक 20 हजार से ज्यादा नये घरों में देवस्थापनाएँ सम्पन्न हो चुकीं हैं।

दो विशाल 108 कुण्डीय महायज्ञ

तेनाली गुण्टूर जिला (आन्ध्र प्रदेश)

तेलुगु चौधरी समाज के मिशननिष्ठ परिजनों ने गुण्टूर एवं कृष्णा जिले के 108 घरों में गायत्री यज्ञ कराया, घर-घर देवस्थापनाएँ करायीं। इस अभियान में 24 लाख गायत्री मन्त्र लेखन और 24 सौ गायत्री चालीसा पाठ कराया गया। अभियान की पूर्णाहुति 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। इसे सम्पन्न कराने के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री उमेश कुमार शर्मा एवं श्रीमती प्रशान्ति शर्मा पहुँचे थे।

तेनाली शाखा के डॉ. श्रीराम जी ने दो माह से सघन मंथन कर अश्वमेध प्रयाज कार्य को गति प्रदान की। बड़ी संख्या में युगशक्ति गायत्री (तेलुगु) पत्रिका के सदस्य बने और घर-घर साहित्य पहुँचा।

चिराला, प्रकाशम् जिला (आन्ध्र प्रदेश)

17, 18, 19 जून 2017 की तारीखों में चिराला में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का विशाल आयोजन सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज से इसे सम्पन्न कराने शांतिकुंज से वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की टोली पहुँची थी। डॉ. बृजमोहन गौड़ ने अपने उद्बोधन में संस्कार परम्परा को प्रोत्साहित किया, परम पूज्य गुरुदेव जैसी महान अवतारी चेतना के दिव्य अभियान में सहयोगी होने का आह्वान किया। श्री काली चरण शर्मा ने गायत्री उपासना के माध्यम से जीवन का कायाकल्प करने का आह्वान किया। उनके वक्तव्यों का तेलुगु अनुवाद श्रीमती प्रशान्ति शर्मा ने किया।

आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना राज्य के अलावा चेन्नई के चुने हुए सक्रिय कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई, जिसमें श्री कालीचरण शर्मा ने पूर्वानुमानित अश्वमेध व्यवस्था पर प्रकाश डाला और डॉ. बृजमोहन गौड़ ने पूज्य गुरुदेव के विचार कणों से अनुप्राणित किया।

चिराला का कार्यक्रम एक दृष्टि में

2116	कलशों सहित विशाल शोभायात्रा।
11116	दीपकों की साक्षी में विराट दीपमहायज्ञ।
50	हजार का साहित्य बिक्री हुई ।
1100	गायत्री मन्त्र दीक्षा।
16000	से ज्यादा लोगों की भागीदारी।

मुनस्यारी, उत्तराखंड में विशिष्ट साधना शिविर

27 तेलुगु साधकों के लिए गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी में विशिष्ट साधना शिविर सम्पन्न हुआ। दक्षिण भारत से आये 27 साधकों ने इसमें भाग लेते हुए अलौकिक अकल्पनीय दिव्यता और नयी ऊर्जा अनुभव की। सभी ने मंगलगिरि, अमरावती आंध्र प्रदेश में होने जा रहे गायत्री अश्वमेध महायज्ञ की विशिष्ट जिम्मेदारियाँ निभाने के संकल्प लिये। उन्होंने 11 लाख रुपये निजी अनुदान देने, 24 लाख रुपये संग्रह करने और घर-घर देव स्थापना अभियान को गति देने का संकल्प लिया।

नयी शक्तिपीठ : गुण्टूर जिले के लाक्षीपुरम में गायत्री शक्तिपीठ का निर्माण हो रहा है। श्रीमती अनीता बहन अपने गाँव वालों का सहयोग लेकर शक्तिपीठ के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं।

जीवन के दुर्लभ अवसर को सौभाग्य में बदलने से चूकें नहीं

डॉ. चिन्मय जी ने अपने दक्षिण भारत के प्रथम प्रवास में हैदराबाद में वैज्ञानिकों व कार्यकर्त्ताओं से किया आह्वान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या 6 एवं 7 जुलाई को हैदराबाद प्रवास पर थे। इन दो दिनों में चार कार्यक्रमों को उन्होंने संबोधित किया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री उत्तम गायकवाड़ और रामावतार पाटीदार उनके साथ रहे। दक्षिण भारत जोन के प्रभारी डॉ. अश्विनी सुब्बाराव, श्री अनिल सुब्बाराव, श्री एम.वी.एस. राजू इन कार्यक्रमों के प्रमुख समन्वयक थे।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिनिधि देव संस्कृति विश्वविद्यालय एनएफएल में वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए

वैज्ञानिकों से कहा – अपने चिंतन के अनुरूप ढलता जाता है अपना जीवन

प्रथम कार्यक्रम राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र (NFL) के सभागार में आयोजित हुआ डॉ. चिन्मय जी ने 'ह्यूमन एक्सीलेंस' विषय पर पावर पॉइण्ट के साथ अपनी बात कही। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन श्रेष्ठ कार्यों के लिए भगवान से मिला अनुपम वरदान है। हर मनुष्य अपने साथ अनंत संभावनाएँ और अवसर लेकर आता है, उन्हें सौभाग्य में या दुर्भाग्य में बदलना उसके अपने चिंतन पर निर्भर है। जिनमें साहस है, संकल्प है और जो आशावादी हैं वे हर चुनौती का सामना करते हुए हँसता-हँसाता जीवन जीते हैं।

इस अवसर पर उन्होंने प्रकृति से प्रेम करने और प्रकृति को बचाने का वैज्ञानिकों से आह्वान किया।

डॉ. चिन्मय जी के साथ श्री जी.कल्याणकृष्णन-प्रतिष्ठित वैज्ञानिक एनएफएल के चेअरमेन एवं चीफ एक्ज़ीक्यूटिव, श्री ए.एन. वर्मा, हैवी वॉटर के चेअरमेन एवं चीफ एक्ज़ीक्यूटिव, डॉ. आर.पी. आचार्य, चीफ एक्ज़ीक्यूटिव, डॉ. दिनेश श्रीवास्तव, चीफ एक्ज़ीक्यूटिव, सहित 250 वरिष्ठ अधिकारी और वैज्ञानिक इस सभा में उपस्थित थे। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने श्री जी.कल्याणकृष्णन जी को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया एवं सभी वैज्ञानिकों को शांतिकुंज आने का आमंत्रण दिया।

'युग वेदव्यास' भवन का शिलान्यास

6 जुलाई को ही डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री ज्ञान मंदिर, स्वर्ण नगर, बोइनपल्ली में नये भवन का शिलान्यास शिलापट्ट का अनावरण कर किया। उन्होंने कहा कि भटके हुए व्यक्ति को सद्बुद्धि प्रदान करना उसकी सबसे अच्छी सेवा है। व्यक्ति के विचार बदल जायेंगे तो उसका जीवन भी बदल जायेगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए हमें दिलों का अमीर बनना होगा, राजा बनना होगा, अपनी साधना से-सद्विचारों से।

आसपास के अनेक जिलों में जनसंपर्क, यज्ञ, दीपयज्ञ से विचार क्रांति का एक सशक्त अभियान चला रहे गायत्री ज्ञान मंदिर के लिए यह अत्यंत सौभाग्य के क्षण थे। शांतिकुंज के प्रखर युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय जी के विचारों ने उपस्थित 200 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं का उत्साह दो गुना कर दिया। उन्होंने पूरे स्वर्णधाम नगर को गायत्रीमय बनाने वाली ज्ञान मंदिर की व्यवस्थापिका श्रीमती श्रीवाणी रंगा राव, राजपुरोहित जी के समर्पण और सूझबूझ के साथ किये जा रहे कार्यों का गुणगान किया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी वेदव्यास भवन के शिलापट्ट का अनावरण करते हुए

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

डॉ. चिन्मय जी की उपस्थिति का लाभ लेते हुए गुरुपूर्णिमा पर्व के उपलक्ष्य में गायत्री चेतना केन्द्र, मूसापेट पर 7 जुलाई को विशेष कार्यक्रम हुआ। दक्षिण भारत जोन प्रभारी डॉ. अश्विनी सुब्बाराव, श्री अनिल सुब्बाराव, श्री वेणुगोपाल राव, श्री एम.वी.एस. राजू, श्री हीरसिंह राजपुरोहित सहित 100 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने अपने आराध्य परम पूज्य गुरुदेव की गुरुता के साथ उनके पिता-रूप का भावभरा स्मरण किया। उन्होंने कहा कि ऐसे महान गुरु का मिलना जीवन का श्रेष्ठतम सौभाग्य है। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का यही सर्वोत्तम समय है। इससे पूर्व 6 जुलाई को शृंग ऋषि भवन, फीलखाना में गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। समाचार गत अंक के पृष्ठ 4 पर देखें।

युग निर्माण विद्यालय, मथुरा के स्वर्ण जयंती वर्ष में हुआ भूतपूर्व विद्यार्थी समागम

आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, आद. श्री मृत्युंजय शर्मा जी एवं श्री आई.एस. पाण्डेय जी समागम का उद्घाटन करते हुए

मथुरा। उत्तर प्रदेश

गायत्री तपोभूमि मथुरा में दिनांक 15 एवं 16 जुलाई की तारीखों में युग निर्माण विद्यालय की स्थापना का स्वर्ण जयंती समारोह सम्पन्न हुआ। सन् 1967 से अब तक इस विवि. से शिक्षाप्राप्त सभी पूर्व विद्यार्थियों को इसमें भागीदारी का आमंत्रण भेजा गया था। विद्यालय के प्रथम प्राचार्य आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी सहित 400 पूर्व विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया।

परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का प्रभाव हमारे जीवन में दिखाई देना चाहिए।

• आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी के संग आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी एवं श्री ईश्वरशरण पाण्डेय जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। वक्ता-श्रोता सभी उत्साह से सरोबोर थे। आदरणीय श्री उपाध्याय जी ने परम पूज्य गुरुदेव की अपने बच्चों से अपेक्षाओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव ने उत्कृष्ट व्यक्तित्वों के निर्माण के लिए युग निर्माण विद्यालय की स्थापना की थी। हमारे जीवन में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों का प्रभाव दिखाई देना चाहिए। हमारा व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली होना चाहिए कि लोग स्वयं हमारा अनुकरण करने के लिए उत्साहित हो जायें।

समागम में पधारे परिजनों के संकल्प ही इसकी सफलता थी। उन्होंने अपने बच्चों को भी युग निर्माण विद्यालय में भेजने का संकल्प लिया। तीनों पत्रिकाएँ स्वयं पढ़ने और दूसरों को पढ़ाने का उत्साह सभी में दिखाई दिया।

शांतिकुंज एवं तपोभूमि में सेवा दे रहे हैं 50 पूर्व विद्यार्थी

युग निर्माण विद्यालय के लगभग 30 पूर्व विद्यार्थी शांतिकुंज में और 20 विद्यार्थी गायत्री तपोभूमि में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। युग निर्माण विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी रहे शांतिकुंज के जीवनदानी कार्यकर्ता सर्वश्री प्रताप शास्त्री, गणेश साहू, शालिग्राम सेन, बंधुलाल पटेल, संतोष सिंह भी इस समारोह में उपस्थित हुए।

अनुभव सुनाते शांतिकुंज प्रतिनिधि संतोष सिंह

400 विद्यार्थियों की भागीदारी

युगसृजेता होने पर गौरव का बोध कराती अभिव्यक्तियाँ

भूतपूर्व विद्यार्थियों ने यहाँ से प्राप्त शिक्षण से जीवन में आये परिवर्तन के मार्मिक संस्मरण सुनाए। उन्होंने अपना उत्साह कुछ इस प्रकार व्यक्त किया।

• हम यहाँ नहीं आए होते तो हम आज जो हैं वह नहीं होते, हम भी कहीं भौतिकता की चकाचौंध में खो गये होते।

• हम औरों से अच्छा जीवन जी रहे हैं और प्रसन्न हैं।

• हम आज भी अपने को विद्यार्थी अनुभव कर रहे हैं।

• हम सौभाग्यशाली हैं कि हम प.पू. गुरुदेव एवं प.वं. माताजी के शिष्य हैं। वे प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देते लेकिन उनका शिक्षण आज भी हर कदम पर हमारे काम आता है।

कनाडा से एक भूतपूर्व छात्र ने लिखा-

प्रसन्नता की बात है कि ऐसे समागम का शुभारंभ हुआ है। वहाँ नहीं आ पाने से दु:खी हूँ, पर वहाँ का वातावरण अनुभव कर सकता हूँ। मैं प्रतिवर्ष एक छात्र का खर्च भेजता रहूँगा।

ज्ञानदीक्षा समारोह ने मानवीय गरिमा के अनुरुप जीवन जीने की प्रेरणा दी

व्यावहारिक बनो, जीवन जीने की कला सीखो

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

"अध्यात्म और विज्ञान दोनों को साथ-साथ पढ़ो। व्यावहारिक बनो, जीवन जीने की कला सीखो। यह विद्या केवल इसी विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाती है। एकाकी ज्ञान अंधकार की ओर ले जाता है। यही कारण है कि दूसरे विश्वविद्यालयों में युवा पीढ़ी भटक रही है, नशे जैसी बुराइयों के चंगुल में फँसती जा रही है।

हम आश्वासन देते हैं कि हम आपको आज से बेहतर बनायेंगे।

ज्ञानदीक्षा नई दृष्टि प्रदान करती है

स्वामी ब्रह्मेशानंद जी, प्रमुख सद्गुरु फाउण्डेशन, गोवा

"ज्ञानदीक्षा पूरे विश्व में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की अद्वितीय परम्परा है। यह दीक्षा विद्यार्थियों को नयी दृष्टि प्रदान करने वाली है। यह उन्हें बताती है कि मानवतावादी जीवन जीना कितना सुन्दर, कितना सुखदायी है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का वातावरण ईश्वरीय सत्ता से, सात्विक सत्ता से परिपूर्ण है। यहाँ का वातावरण सब कुछ बदल देने में सक्षम है।

व्यक्तित्व निर्माण करने वाला एकमात्र मंदिर

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय

"युवा वही है जो जीवन की नाव को चुनौतियों से, झंझावातों से, प्रहारों से टकराकर किनारों को छूना जानता है। अपना देश, तड़पता समाज ऐसे जज़्बे वाले व्यक्तित्वों की तलाश बड़ी शिद्दत से कर रहे हैं।

ज्ञानदीक्षा समारोह जीवन के द्वार पर दस्तक देते सौभाग्य के क्षणों का बोध कराने का अवसर है। महापुरुष वे ही बन सके जो ऐसे अवसरों को स्वीकार करने और सौभाग्य में बदलने के लिए तैयार थे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का 31वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह 20 जुलाई 2017 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कुलाधिपित डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 40 पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले 525 विद्यार्थियों को ज्ञानदीक्षित किया। उन्होंने विद्यार्जन के समय आचार्य एवं विद्यार्थियों द्वारा अपनाये जाने वाले अनुशासनों और वर्जनाओं की व्याख्या की और उनका निष्ठापूर्वक अनुपालन करते हुए जीवन को सुगढ़ बनाने के संकल्प वैदिक मंत्रों के साथ दिलाये। सद्गुरु फाउण्डेशन, गोवा के प्रमुख स्वामी ब्रह्मेशानन्द समारोह के मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि स्वामी ब्रह्मेशानन्द, कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। तत्पश्चात् कुलगीत और सद्गुरु और ज्ञान की महिमा बताते प्रज्ञागीत गाये गये।

कुलपति श्री शरद जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में विवि. की असाधारण उपलब्धियों

की चर्चा करते हुए अतिथियों का भावभरा स्वागत किया। नवप्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए अपनी श्रद्धा, समर्पण और अथक पुरुषार्थ राष्ट्रनिर्माताओं की पंक्ति में खड़े होने एवं जीवन धन्य बनाने का आह्वान किया।

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ज्ञानदीक्षा की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह अवसर को सौभाग्य में बदलने के क्षण हैं। सभी व्यक्ति एक जैसे होते हैं लेकिन जो अवसर को पहचानते और उसे सौभाग्य में बदलने के लिए तत्पर हो जाते हैं, वे समर्थ रामदास, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुष बन जाते हैं।

विल्नियस विश्वविद्यालय के कुलपति पधारे

यूरोप के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से एक विल्नियस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के कुलपति प्रो. वाल्दस जसकुआन एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के निदेशक स्मिर्मोटे ई.यू. प्रोजेक्ट के संदर्भ में देव संस्कृति विश्वविद्यालय पधारे। उन्होंने प्राचीन विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली एवं प्रबंधन के संदर्भ में प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं अन्य अधिकारियों से चर्चा की। देसंविवि में सभी विभागों के अलावा गौशाला, एक्यूप्रेशर पार्क, महाकाल मंदिर, वनौषधि वाटिका आदि का विशेष उत्साह के साथ निरीक्षण किया। मानवीय उत्कर्ष में सहायक इन स्थापनाओं से वे बहुत प्रभावित हुए।

डॉ. चिन्मय जी ने प्राचीन शिक्षा और प्रबंधन की अच्छाइयों को पुनर्जीवित करने के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। यूरोपीय देशों में भी इस दिशा में हो सकने वाले कार्यों पर चर्चा हुई।

उल्लेखनीय है कि विल्नियस विवि. और देव संस्कृति विवि के बीच एमओयू है, जिसके अंतर्गत दोनों विवि परस्पर सहयोग से कई रचनात्मक विषयों पर कार्य कर रहे हैं। प्रथम चरण में शैक्षिक भ्रमण पर सहमति बनी।

प्रो. वाल्दस जसकुआन एवं स्मिर्मोटे डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ

गायत्री परिवार के प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ण्ड्या अध्यात्म जगत के सर्वोच्च 'टैम्पलटन पुरस्कार' की चयन समिति के सदस्य (जज) नियुक्त

वैश्विक स्तर पर अध्यात्म जगत का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान करने वाली संस्था जॉन टैम्पलटन फाउंडेशन ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या को पुरस्कार चयन समिति का सदस्य नियुक्त किया है।

उल्लेखनीय है कि टैम्पलटन पुरस्कार नोबल पुरस्कार से भी बड़ा पुरस्कार माना जाता है जो अपनी अंतःदृष्टि, खोज अथवा कार्यों से मानवमात्र के लिए जीवन की बेहतर समझ विकसित करने, मानवता की भलाई का मार्ग प्रशस्त करने एवं विश्व में प्रेम और भक्तिभाव का विस्तार करने में सर्वोत्कृष्ट योगदान देने वाले चयनित व्यक्ति को प्रदान किया जाता है। जॉन टैम्पलटन फाउण्डेशन की वर्तमान अध्यक्षा हेथर टैम्पलटन डिल, जो कि जॉन टैम्पलटन की पौत्री हैं, बताती हैं कि उनके दादा जॉन टेम्पलटन का मानना था कि अध्यात्म मानवता के उत्थान का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम है। नोबल पुरस्कार विजेता का चयन करते समय इस योग्यता पर ध्यान नहीं दिया जाता। टैम्पलटन पुरस्कार में दी जाने वाली धनराशि भी नोबल पुरस्कार से कहीं ज्यादा, 17 लाख पाउण्ड होती है।

नोबल पुरस्कार से भी बड़ा माना जाता है यह पुरस्कार

सन् 1973 से प्रतिवर्ष यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। अब तक केवल पाँच भारतीयों-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, मदर टेरेसा, दलाई लामा, बाबा आम्टे और पांडुरंग शास्त्री आठवले को ही यह प्राप्त हुआ है।

डॉ. चिन्मय जी के अध्यात्म के प्रति समर्पण एवं मनोवैज्ञानिक अनुभवों के आधार पर उन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। वे अगले तीन वर्षों तक नौ सदस्यीय चयन समिति के सदस्य रहेंगे।

विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को साथ लेकर अपने पिता डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में पूरे विश्व के विद्वानों पर गहरा प्रभाव डाला है। देखिये कुछ उपलब्धियाँ -

- **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् ने अपनाये डॉ. चिन्मय जी के विचार :** डॉ. चिन्मय पण्ड्या जॉर्डन में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की विशेष सभा में उपस्थित विश्व के 32 नामी विद्वानों में भारत की ओर से एकमात्र प्रतिनिधि थे। उन्होंने आतंकवाद, सामूहिक हत्या, धर्म के नाम पर बढ़ते नरसंहार जैसी समस्याओं के समाधान के रूप में परम पूज्य गुरुदेव पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार इतने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किये कि उन सूत्रों को संयुक्त राष्ट्र परिषद में शामिल करने का निर्णय लिया गया।
- **योग को विश्व-धरोहर घोषित कराने में अद्वितीय योगदान :** वर्ष 2016 में योग को विश्व धरोहर घोषित किये जाने के संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 11वीं सभा आदिस अबाबा, इथियोपिया में आयोजित हुई। भारत सरकार ने डॉ. चिन्मय जी को भारत का पक्ष रखने के लिए भेजा था। उन्होंने इतने वैज्ञानिक ढंग से अपनी बात विश्व के 160 राजदूतों के समक्ष प्रस्तुत की कि सभी ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।
- **ब्रिटिश सरकार व कॉमनवैल्थ द्वारा आयोजित सेमीनार में अध्यक्षता की :** पिछले दिनों विश्व की चुनी हुई 20 फेथ बेस्ड यूनिवर्सिटीज़ के सेमीनार में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यह सेमीनार ब्रिटिश सरकार के विदेश मंत्रालय और कॉमनवैल्थ द्वारा 'रोल ऑफ फेथ बेस्ड यूनिवर्सिटीज़ इन प्रोमोटिंग रिस्पैक्ट' विषय पर आयोजित की गयी थी। डॉ. चिन्मय पण्ड्या को इस सेमीनार में सत्र की अध्यक्षता करने का गौरव प्राप्त हुआ।
- **विश्व प्रसिद्ध गणमान्यों पर प्रभाव :** डॉ. चिन्मय पण्ड्या जॉर्डन के प्रिंस बिन गाज़ी, प्रिंस चार्ल्स, ऑस्ट्रेलिया की पूर्व प्रधानमंत्री जुलिया गिलार्ड, सर जॉन वुड, दलाई लामा, स्कॉटलैंड कीबारोनेस, कॉमनवेल्थ देशों की प्रमुख सुश्री पेट्रिशिया आदि अनेक विश्व प्रसिद्ध हस्तियों के साथ अलग-अलग मंचों पर चर्चा कर चुके हैं। उन्हें युगऋषि के विचारों से अवगत करा चुके हैं, जिनका उन सभी पर गहरा प्रभाव देखा गया।

देसंविवि के आचार्य डॉ. पियूष त्रिवेदी को मिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद विभाग के समन्वयक डॉ. पियूष गोयल को वीनस इंटरनेशनल फाउण्डेशन ने सोशल साइंस में आउट स्टैण्डिंग फैकल्टी के रूप में पुरस्कृत किया है। उन्हें यह पुरस्कार डॉ. देवरथ एण्ड्रयू, साउथ बैंक यूनिवर्सिटी लंदन एवं डॉ. सोमशेखर एस, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मद्रास द्वारा 8 जुलाई 2017 को प्रदान किया गया। डॉ. गोयल को सम्मान स्वरूप एक मैडल, प्रमाण पत्र एवं सम्मान पत्र प्रदान किये गये हैं।

कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या का मार्गदर्शन मिला

डॉ. पियूष त्रिवेदी कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को अपना मार्गदर्शक बताते हैं। उनके अनुसार डॉ. साहब की गीता और ध्यान की कक्षाओं में मिलने वाले सूत्र उनके शोधकार्य की विषय वस्तु होती है। उन्हीं के आधार पर आध्यात्मिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में वे उल्लेखनीय रचनात्मक कार्य कर रहे हैं।

डॉ. पियूष त्रिवेदी सम्मान ग्रहण करते हुए

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (ÂæÌÑ v® â âæØ z ÕÁ Ì·¤) **email :** pragyaabhiyan@awgp.in
â×æ¿æÚ âÂæÎÙ Ñ news@awgp.in °ß news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.8.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO. WPP/ 04
RENEWED 2015-2017